ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही ५५६ अक्तूबर 2024 वर्ष १८ अंक २

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब

बाबा बंदा सिंघ बहादुर

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही 556
वर्ष 18 अंक 2 अक्तूबर 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
महिमा श्री गुरु रामदास जी की 7
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
गुरु-घर के समर्पित सेवक : बाबा बुड्ढा जी 14
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
बाबा बंदा सिंघ बहादुर 16
-डॉ. मनजीत कौर
टैहल करत कौ महल पुचावौ। 21
-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर
सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 25
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सिंघ सभा लहर का उत्थान और प्रभाव 29
-डॉ. गुरमिंदर सिंघ रूपोवाली
साका पंजा साहिब के शहीद 32
- स. हरविंदर सिंघ खालसा
गुरुद्वारा श्री थड़ा साहिब, बागेश्वर 34
-डॉ. परमवीर सिंघ
कबीर राम कहन महि भेदु है . . . 37
- डॉ. चमकौर सिंघ
पाँच खंड 39
-प्रो. दविंदर पाल सिंघ
खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभु राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥ *(पन्ना १३५)*

बाणी के बोहिथ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में कार्तिक मास की सुहावनी बहार में मनुष्य-मात्र को अपना अमूल्य मनुष्य-जन्म सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यदि जीवन की कार्तिक मास की सुहावनी ऋतु में परमात्मा के मिलाप हेतु जीव शुभ कर्म करने से अथवा नाम-सुमिरन से वंचित रह गया तो इसमें किसी का क्या दोष है? यह दोष उस जीव पर ही लागू होना चाहिए जो प्रायः अनुकूल परिस्थितियां होने के बावजूद भी प्रभु-नाम जपने की दिशा में गतिशील नहीं होता। सतिगुरु जी स्पष्ट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जीव परमात्मा को भूल जाता है और परमात्मा के भूल जाने से ही जीव को सभी प्रकार के अर्थात् शारीरिक और मानसिक रोग लग जाते हैं। प्रभु से मुंह मोड़ लेने से जन्म-वियोग अर्थात् अत्यंत लंबा बिछोड़ा मिलता है। प्रभु-नाम को भूल कर जीव माया के भोग भोगता है जो कि प्रभु भूल जाने पर यकदम कड़वे लगने लग जाते हैं। जीव की ऐसी दुखदायक स्थिति किसी बाहरी प्रयास से बदल नहीं सकती। वह किसके पास प्रतिदिन अपना दुख व्यक्त करे? मात्र बाहरी प्रयास फलदायक नहीं होते और प्रभु मालिक ही जीव के उद्धार का संयोग बनाता है। अच्छे भाग्य हों, तभी मालिक से मिलाप होता है, जिससे जन्मों का वियोग भी दूर हो जाता है। सतिगुरु प्रभु से विनती करते हैं कि हे बंधनों से मुक्त करने वाले मालिक! मुझको इस भौतिक संसार की माया के प्रभाव से बचा लेना। यदि कार्तिक की सुहावनी ऋतु में अच्छे मनुष्यों का साथ मिल जाए तो प्रभु से जुदा रखने वाली सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं।

संपादकीय

गुरु-घर के कर्मनिष्ठ एवं श्रद्धेय सिक्ख सेवक : बाबा बुड्ढा जी

गुरु व सिक्ख का परस्पर सम्बंध बहुत गहरा है । गुरु अकाल पुरख की ज्योति है। यह ज्योति प्रत्येक मानव में व्याप्त है जो सोई हुई अध्यात्म संवेदना को अपने दैवी स्पर्श से जागृत कर इस संसार में विचरण करते हुए परमात्मा के साथ मिलन करवाती है। गुरु और शिष्य, मुरशिद और मुरीद आदि युग्म धारणाएं संसार के विभिन्न मतों में भी मिलती है परंतु गुरु व सिक्ख का जो विशुद्ध एवं गहरा परस्पर सम्बंध सिक्ख धर्म में है वह अन्यत्र अलभ्य है। इस आपसी सम्बंध को सिक्ख इतिहास के व्यक्ति विशेष सिक्खों ने सुदृढ़ बनाने हेतु अहम योगदान दिया है। इन्हीं व्यक्ति विशेष सिक्खों में से बाबा बुड्ढा जी का नाम सिक्ख इतिहास के पृष्ठों पर अति निष्ठा के साथ अंकित है।

बाबा बुड्ढा जी बचपन से ही गुरु-घर की सेवा को इस प्रकार समर्पित हुए कि सम्पूर्ण आयु सेवा के लेखे लगा दी। बाबा जी गुरु नानक पातशाह के दर्शन-दीदार करते ही गुरु-घर के साथ ऐसी घनिष्ठता के साथ जुड़े कि फिर कभी अलग न हुए। बाबा बुड्ढा जी सिक्ख इतिहास के विषम दौर में गुरु-घर से बिछड़ी हुई सिक्ख संगत का गुरु-घर के साथ मिलाप करवाने हेतु एक कड़ी, मध्यस्थ का कार्य करते रहे। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु साहिबान और सिक्ख संगत की जो सेवा की वह दुर्लभ एवं बेमिसाल है। उन सेवाओं में कुछेक का सांकेतिक विवरण हमारे सूझवान और अनुभवी लेखक सिक्ख इतिहास के अध्ययन / विश्लेषण द्वारा समय-समय पर पेश करने का प्रयास करते रहते हैं।

बाबा बुड्ढा जी का जीवन समूह सिक्ख संगत के लिए गुरु-घर की निष्काम सेवा के प्रति जुड़े रहने के लिए सदैवकालीन प्रेरणास्रोत है। बाबा जी ने एक उच्च ज़मींदार घराने में जन्म लेकर अपने आपको सदैव ही एक अदना-सा सिक्ख-सेवक समझा, कभी भी ज़मीन, संपत्ति, धन-दौलत का अहं-भाव अपने पास फटकने नहीं दिया। 'बूड़ा' नामक बालक गुरु नानक पातशाह के साथ भेंटवार्ता करते हुए 'बुड्ढा' (वृद्ध,

प्रौढ़) का गौरवशाली रुतबा प्राप्त करते हैं। कृपालु गुरु नानक पातशाह द्वारा प्रदत्त यह रुतबा युगों-युगांतरों तक अटल है।

बाबा बुड्ढा जी जिंदगी भर इसी रूप में गुरु-घर की सेवा को समर्पित रहे और अपने नाम की अहमियत को चार चाँद लगाते रहे। गुरमति जीवन-युक्ति का सम्मान करते हुए आप गृहस्थ धर्म के धारक भी बने। आपका संपूर्ण परिवार ही गुरु-घर की सेवा में समर्पित रहा।

बाबा बुड्ढा जी को 'अमृत सर' (अमृत सरोवर), श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण की सेवा अपने हाथों से करने व सिक्ख संगत से करवाने का गौरव हासिल हुआ। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब की परिक्रमा में स्थित बेर बाबा बुड्ढा जी आपकी स्मृति को तरोताजा रखने में मुख्य भूमिका निभाती है।

बाबा बुड्ढा जी के शीश पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को सुशोभित किया गया, और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने कर-कमलों से चंवर किया। बाबा बुड्ढा जी को पावन स्वरूप का पावन पाठ संगत को श्रवण करवाने की महान सेवा श्री हरिमंदर साहिब के सर्वप्रथम ग्रंथी के रूप में प्राप्त हुई।

बाबा बुड्ढा जी ऐसे भाग्यशाली गुरसिक्ख हैं जिन्हें छः गुरु साहिबान के साथ जीवन-निर्वाह करने, सेवक के रूप में अंग-संग विचरण करने आदि का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबा जी को श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरुआई पर विराजमान करने की रस्म को निभाने का गौरव भी हासिल हुआ। बाबा जी ने गुरु-घर के विरोधियों द्वारा गुरु-घर को पहुंचाई जा रही क्षति को एक मज़बूत किले की भांति डटकर रोका तथा सिक्ख संगत को गुरु व गुरबाणी की मौलिक धारा के साथ जोड़े रखा। छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की संपूर्ण शिक्षा-दीक्षा की सेवा आप जी को ही मिली। बाबा जी ने अपनी अंतिम सांस भी छठम पातशाह की गोद में ही ली।

महिमा श्री गुरु रामदास जी की

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु रामदास जी का जीवन और बाणी दोनों ही अमृत से भरे सरोवर की तरह हैं। अमृत की एक बूंद भी जीवनदायिनी और अमरत्व प्रदान करने वाली है। दंतकथाओं के अनुसार, समुद्र-मंथन में से अमृत का एक कलश निकला था, जिसे प्राप्त करने के लिये सुर-असुर संग्राम छिड़ गया था। सिक्ख भाग्यशाली हैं कि उनके पास अमृत का पूरे का पूरा सरोवर प्राप्त है। यह सरोवर न खत्म होने वाला है, न कभी कम होने वाला है। श्री गुरु रामदास जी का सरोवर सदा ही भरा रहने वाला है। उनका जीवन युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा। उनकी बाणी अनादि काल तक मानव समाज का मार्ग प्रकाशित करती रहेगी। श्री गुरु रामदास जी का जीवन सौभाग्य के उदय की कथा है। शिशु काल में ही माता जी का इंतकाल हो गया। सात वर्ष की आयु में पिता जी भी न रहे। गुरु साहिब का नाम परिवार ने 'रामदास' रखा था, किन्तु सबसे बड़ी संतान होने के कारण उन्हें 'जेठा' बुलाया जाता था। 'जेठा' का अर्थ है— ज्येष्ठ अथवा श्रेष्ठ। यह संयोग नहीं विधि के विधान का संकेत था कि श्रेष्ठता शिशु अवस्था से ही उनके साथ जुड़ गई थी। यह श्रेष्ठता सदैव उनके साथ बनी रही। तब भी जब वे चने- घुंघनियाँ बेचते थे, तब भी जब वे श्री गुरु अमरदास जी के दामाद बने और तब भी जब श्री गुरु अमरदास जी ने उन्हें गुरुआई सौंपी। गुरुआई पर आसीन होने के बाद उनकी श्रेष्ठता मानों सरोवर बन गई। पिता के देहावसान के पश्चात जब अकेले रह गये तब श्री गुरु रामदास जी की नानी उन्हें लाहौर से बासरके ले आईं। बासरके श्री गुरु अमरदास जी का भी निवास-स्थान था। श्री गुरु अमरदास जी, जो उस समय बासठ वर्ष के हो चुके थे और अभी श्री गुरु अंगद साहिब से उनका मेल नहीं हुआ था, बालक भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) से मिलने आये। यह भविष्य के दो गुरु साहिबान का अद्‌भुत मेल था। उस समय श्री गुरु अमरदास जी के पास देने को आश्वस्तता और सहयोग था। श्री गुरु रामदास जी के लिये यही पर्याप्त था। एक समय ऐसा आया जब श्री गुरु अमरदास जी के पास देने के लिये परम पद, गुरु का पद था और श्री गुरु रामदास साहिब इसे प्राप्त करने के सर्वथा योग्य बन चुके थे। श्री गुरु रामदास जी को सात वर्ष की आयु में ही जीवन की राह

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

मिल गई, यत्र-तत्र भटकना नहीं पड़ा। श्री गुरु अंगद जी की शरण में आने के पश्चात जब श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब नगर बसा कर सपरिवार वहां रहने लगे, श्री गुरु रामदास जी भी अपनी नानी के साथ बासरके छोड़ गोइंदवाल साहिब आ गये। आरंभ से ही श्री गुरु रामदास जी के जीवन में एक संत के लक्षण प्रकट होते दिखाई देते हैं। माता-पिता के न रहने के बाद उन्होंने परमात्मा को अपना माता-पिता मान लिया था। परमात्मा जिस भी अवस्था में रख रहा था, उसे भावना से स्वीकार करते चल रहे थे :

तू अंतरजामी हरि आपि
जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ।।
हमरै हाथि किछु नाहि
जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ।।
जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी
सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ।।
तिन की गणत न करिअहु को भाई
जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १११५)

परमात्मा का सच्चा भक्त, संत अपना जीवन परमात्मा के भरोसे छोड़ उसकी आज्ञा में रहना सीख जाता है। वह अपने सामर्थ्य, बुद्धि को नहीं, गुरु की मति को जीवन का आधार बना कर जीवन में कर्म करता है। जो परमात्मा दे रहा है उसमें संतुष्ट और प्रसन्न रहता है। परमात्मा जिस पर कृपा करता है उसका जीवन संवर जाता है। गुरु की कृपा से अपार महत्ता, श्रेष्ठता प्राप्त होती है। श्री गुरु अमरदास जी से सात वर्ष की आयु में मेल के बाद श्री गुरु रामदास जी का जीवन ऐसा ही बनने लगा था।

गुरु की श्रेष्ठता कुछ दिनों, कुछ वर्षों का अर्जन नहीं है। यह श्रेष्ठता तो परमात्मा से प्राप्त हुई और किसी न किसी रूप में विकसित व प्रकट होती गई। माता-पिता के न होने पर श्री गुरु रामदास जी विरक्त नहीं हुए, बल्कि परमात्मा पर आस्था को और दृढ़ किया। उनके लिये परमात्मा ने यही विधि निश्चित की थी। महानता तो यह थी कि श्री गुरु रामदास जी ने इस विधि को सच्ची भावना से निभाया और श्रेष्ठता-प्राप्ति की ओर बढ़ते गये :

माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए।।
सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए।।१।।
हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ।।
हरि का तनु मनु सभु
हरि कै वसि है सरीर।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९४)

सभी सांसारिक संबंध परमात्मा की व्यवस्था हैं। वह संबंध बनाता है और भंग भी वही करता है। इस पर मनुष्य का कोई ज़ोर नहीं है। परमात्मा जैसा चाहता है वैसे ही संबंध बनाता और चलाता है। परमात्मा ने ही पिता श्री हरिदास जी से संबंध तोड़ा और श्री गुरु अमरदास जी के साथ संबंध जोड़ा था।

यह संबंध इसलिये जोड़ा क्योंकि अंत तक निभने वाला था। परमात्मा जिससे जो कार्य लेना चाहता है उस पर वैसी ही कृपा करता है। परमात्मा श्री गुरु रामदास जी से जगत के उद्धार की सेवा लेना चाहता था, इसलिये उन्हें लाहौर से बासरके और बासरके से गोइंदवाल साहिब ले गया। बासरके और गोइंदवाल साहिब में श्री गुरु रामदास साहिब ने चने बेचते हुए कभी हीनता महसूस नहीं की, इसे ईमानदार किरत के रूप में देखा। उनका मन बाल अवस्था में ही निर्मलता से ऐसा परिपूर्ण हो गया था कि वे कई अवसरों पर आने वाली संगत को बिना पैसे लिये चने सेवा व प्रेम-भाव से खिला दिया करते थे। श्री गुरु अमरदास जी के संग का प्रभाव हुआ कि मन परमात्मा की भक्ति में भी रमने लगा था। आध्यात्म के गूढ़ रहस्य खुलने लगे थे। इससे श्री गुरु रामदास जी का व्यक्तित्व निखरने लगा था। यह विकास एक सहज प्रक्रिया के अंतर्गत हो रहा था, जिसका ज्ञान या श्री गुरु अमरदास जी को था जिनकी कृपा से यह कौतुक घटित हो रहा था या श्री गुरु रामदास जी जानते थे, जो आत्मिक विकास के इस दौर से गुजर रहे थे।

श्री गुरु रामदास जी के लिये सांसारिक स्थितियां गौण होती चली गईं। जब गुरु से प्रीति बन जाये तो मन की कामनायें कैसे बदल जाती हैं, इसका उल्लेख स्वयं श्री गुरु रामदास जी ने अपनी बाणी में किया, जो प्रत्येक सिक्ख के लिये कसौटी की तरह है :

माता प्रीति करे पुतु खाइ।।
मीने प्रीति भई जलि नाइ।।
सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ।।१।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६४)

माँ की प्रीति (प्रेम) अपने पुत्र, संतान, परिवार के पालन-पोषण की होती है। मछली की प्रीति जल के साथ है, क्योंकि जल उसका जीवन-आधार है। सतिगुरु अपने सिक्ख के साथ प्रीति करता है, जब वो देखता है कि उसका सिक्ख मानव-सेवा करता है। इसी तरह अपनी बाणी में आगे गुरु साहिब ने कहा है कि जैसे गाय की अपने बछड़े के साथ प्रीति है, स्त्री की अपने पति से प्रीति है, वैसी ही घनी प्रीति गुरसिक्ख के मन में है कि वह हरि, परमात्मा के गुणों का गायन करता रहे।

श्री गुरु रामदास जी ने बाबिहे की वर्षा की जल-धारा के साथ प्रीति और राजा की अपने राज्य व खजाने की विशालता के साथ प्रीति का उल्लेख करते हुए कहा है कि ऐसी ही उमंग गुरसिक्ख के मन में परमात्मा का नाम जपने की होती है। सांसारिक मनुष्य अधिक से अधिक धन एकत्र करने में लगा है, जबकि गुरसिक्ख की सबसे बड़ी निधि गुरु का प्रेम प्राप्त कर लेना और गुरु के चरणों मे सर्वस्व अर्पित कर देना है। गुरु की प्रीति में श्री गुरु रामदास जी ने अपना सर्वस्व गुरु को अर्पित कर दिया था।

वे अपने नाम के अनुरूप ही 'राम' अर्थात् सर्वत्र रमे हुए वाहिगुरु परमात्मा के दास बन गये थे। श्री गुरु अमरदास जी की शरण में रह कर उन्हें नित्य गुरु-दर्शन होते, नित्य साधसंगत में नाम जपने, गुरु का यश गायन करने का सुअवसर प्राप्त होता, प्रतिदिन सेवा का सौभाग्य मिलता। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह श्री गुरु रामदास जी के साथ करा कर अपने प्रेम से निहाल कर दिया। श्री गुरु रामदास जी तो पहले ही गुरु के हो चुके थे। श्री गुरु अमरदास जी की सुपुत्री बीबी भानी जी के साथ विवाह से पूर्व, जो सेवा और प्रेम-भावना श्री गुरु रामदास जी में थी, विवाह होने और गुरु साहिब का दामाद बनने के बाद भी वैसी ही रही। गुरसिक्ख जिस भी हाल में रहे, उसके मन की भावना नहीं बदलती :

लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई।।
जे राजि बहाले ता हरि गुलामु
घासी कउ हरि नामु कढाई।।
जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६६)

श्री गुरु रामदास जी का उपरोक्त वचन प्रत्येक सिक्ख के लिये अनमोल एवं सदैव ध्यान रखने योग्य है। गुरसिक्ख तो बाजार में बिक चुके गुलाम की तरह है। पुरातन काल में गुलाम-प्रथा प्रचलित थी। धनी, शक्तिशाली लोग अपने दिन-रात के कार्यों के लिये गुलाम रखा करते थे। गुलामों की खरीद के लिये बाजार लगा करते थे। पूरा मूल्य देकर किसी वस्तु की भांति गुलाम खरीद लिये जाते थे। गुलाम का जीवन पूर्ण रूप से स्वामी की इच्छा पर आश्रित हो जाता था। गुरसिक्ख का जीवन गुरु के खरीदे हुए गुलाम, दास की तरह ही है। गुरु जैसा रखता है सिक्ख वैसा ही रहता है। वह स्वेच्छा से गुरु की आज्ञा में रहता है। गुरु उसे राजपाट का अधिकारी बना दे अथवा सबसे हीन, घास काटने वाला घसियारा बना दे, उसकी भावना सदैव, प्रत्येक स्थिति में एक समान बनी रहती है। श्री गुरु रामदास जी ने कहा कि गुरसिक्ख की पूर्ण श्रेष्ठता और अंतिम महानता गुरु का दास, सेवक होने में है। यह गुरसिक्ख की सबसे ऊंची पदवी है। श्री गुरु रामदास जी का जीवन ऐसा ही था।

श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-जोत समाने के बाद श्री गुरु रामदास जी को सन् १५७४ में गुरुआई हासिल हुई। सन् २०२४ में गुरु साहिब का गुरुआई पर आसीन होने का ४५०वां पर्व मनाया जा रहा है। गुरु-घर की विनम्रता और सेवा की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी द्वारा चिन्हित स्थान पर सरोवर का निर्माण कराने और नया नगर बसाने के कार्य को प्राथमिकता दी। सन् १५७४ में गुरु साहिब ने जो नगर बसाया उसे 'गुरु का चक्क' व 'रामदासपुर' कहा गया। इसी नगर का नाम

बाद में 'अमृतसर' पड़ा। श्री गुरु रामदास जी ने इस नये नगर में अपना निवास स्थापित करने के साथ ही नगर को बहुसंस्कृति, बहुकर्मशीलता के केंद्र के रूप में भी विकसित करने के लिये स्वयं प्रयास किये। विभिन्न व्यवसायों, उद्यमों, कौशल से संबन्धित लोगों को गुरु साहिब ने यहां आकर बसने को प्रेरित किया। गुरु साहिबान ने उन्हें अपने उद्योग-धंधे स्थापित करने में सहायता भी प्रदान की। श्री अमृतसर साहिब का वर्तमान 'गुरु बाजार' श्री गुरु रामदास जी द्वारा ही स्थापित किया हुआ है। सरोवर की खुदाई भी पूरी हो गई, जिसे बाद में श्री गुरु अरजन साहिब ने पक्का करा कर सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया था। कहते हैं कि जब सरोवर की खुदाई हो रही थी, तो श्री गुरु रामदास जी स्वयं सिर पर मिट्टी की टोकरियां उठाकर ढोया करते थे। उस समय श्री गुरु अरजन साहिब की आयु पंद्रह वर्ष की थी। अपने पिता श्री गुरु रामदास जी का अनुसरण करते हुए वे भी सेवा करने लग जाते थे। श्री गुरु अरजन साहिब स्वयं इस अमृत सरोवर के निर्माण के साक्षी थे कि कैसे सरोवर की खुदाई का कार्य अद्‌भुत ढंग से सम्पन्न हुआ। उन्होंने इसे 'रामदास सरोवर' का नाम दिया और इसकी महानता अपनी निम्न बाणी में प्रकट की :

विचि करता पुरखु खलोआ ।।
वालु न विंगा होआ ।।
मजनु गुर आंदा रासे ।।
जपि हरि हरि किलविख नासे ।।१।।
संतहु रामदास सरोवरु नीका ।।
जो नावै सो कुलु तरावै उ
धारु होआ है जी का।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२३)

सरोवर का निर्माण एक कठिन कार्य था जो परमात्मा की कृपा से सम्पन्न हुआ था। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि इस कार्य में कोई विघ्न नहीं उत्पन्न हुआ। इस सरोवर की बड़ी महानता है। इसमें स्नान करने से अपना ही कल्याण नहीं होता, पूरे कुल का उद्धार हो जाता है। परमात्मा के प्रति श्रद्धा और ध्यान रख कर इस सरोवर में स्नान करने से जन्मों-जन्मों के पाप मिट जाते हैं। श्री गुरु रामदास जी की कृपा सदैव इस सरोवर पर और पूरे श्री अमृतसर साहिब नगर पर बरस रही है। श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन साहिब की महानता से परिपूर्ण यह गुरु-स्थान तथा महानगर आज सिक्ख कौम का केंद्रीय स्थान है और सिक्ख धर्म की पहचान बन गया है, जिसके दर्शन की उत्सुकता सिक्ख ही नहीं पूरे विश्व के सभी धर्मों-जातियों के लोगों को रहती है। गुरसिक्ख के लिये ऐसा कोई दूसरा स्थान नहीं है। यह श्री गुरु रामदास जी का सिक्खों पर ही नहीं पूरे मानव समाज पर महान उपकार है। भाई गुरदास जी ने इस भाव को

सुंदर ढंग से शब्दों मे सँजोया है :

राग दोख निरदोखु है राजु जोग वरतै वरतारा।
मनसा वाचा करमणा मरमु न जापै अपर अपारा।

(वार २४ : १४)

भाई गुरदास जी ने कहा कि श्री गुरु रामदास जी के दरबार में कोई दोष, कोई द्वेष, कोई अवगुण है ही नहीं। वहां केवल गुण हैं, पवित्रता है, उल्लास है। श्री गुरु रामदास जी के दरबार में परमात्मा के साथ मेल की शक्ति अद्‌भुत विधि से प्रकट हो रही है। श्री गुरु रामदास जी की महिमा अपार है, अगम्य है, जिसे न तो ध्यान में ग्रहण किया जा सकता है, न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है और न क्रिया में प्रकट किया जा सकता है।

भट्ट साहिबान श्री गुरु रामदास जी की महिमा से इतने अभिभूत हुए कि उन्हें गुरु साहिब के दरबार में सारे ब्रह्मांड, सारे युगों के दर्शन हुए थे— *''सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे।।''* श्री गुरु रामदास जी ने परमात्मा के लिये लोगों के मन में भक्ति-भाव भी उत्पन्न किया, जिससे लोगों के मन तृप्त हो गये— *''अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे।।''* भक्ति-भावना दृढ़ कराने के लिये श्री गुरु रामदास जी ने विशेष यत्न किये। इतिहास में उल्लेख है कि श्री गुरु रामदास जी ने गुरबाणी के शब्दों की प्रतिलिपियां तैयार कर संगत में वितरित कराईं। गुरु साहिब ने सिक्खों को केवल गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित बाणी का ही पाठ करने का हुक्म देकर गुरबाणी की शुद्धता सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कदम उठाया। गुरु साहिब ने स्वयं सिक्खी-सिद्धांतों के मर्म को अपने जीवन के आरंभ में ही ग्रहण कर लिया था, जिसका प्रमाण उनकी मुगल बादशाह अकबर से हुई मुलाक़ात है।

श्री गुरु अमरदास जी के काल में उनके विरुद्ध ईर्ष्यालु लोगों ने अकबर को अनर्गल शिकायतें कीं। अकबर उस समय लाहौर में था। उसने सच जानने के लिये श्री गुरु अमरदास जी को बुलाया। श्री गुरु अमरदास जी अति वृद्ध हो चुके थे। उन्होंने अपने स्थान पर युवा श्री गुरु रामदास जी, जो उस समय भाई जेठा जी नाम से जाने जाते थे, को लाहौर भेजा। लाहौर में श्री गुरु रामदास जी ने गुरु-घर, सिक्खी-सिद्धांतों का पक्ष इतने नियोजित, तार्किक और स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत किया कि सभी शिकायतें मिथ्या सिद्ध हो गईं। अकबर श्री गुरु रामदास जी के ज्ञान से इतना प्रभावित हुआ कि उसने कुछ मांगने को कहा। श्री गुरु रामदास जी ने स्वयं के लिये, गुरु-घर के लिये, सिक्ख संगत के लिये कुछ मांगने के स्थान पर प्रजा पर लगे अनुचित कर हटाने की मांग की। अकबर श्री गुरु रामदास जी की उदारता से अति प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत कर हटाने के आदेश दे दिये।

वास्तव में सिक्ख गुरु साहिबान का

दृष्टिकोण सदैव विशाल और उदार रहा। गुरु साहिबान ने पूरी मानवता की चिंता की और सर्वकल्याण की भावना को आगे बढ़ाया। उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए सिक्ख नित्य सरबत्त के भले की अरदास करते हैं। श्री गुरु रामदास जी ने कहा कि जीवन की सार्थकता के लिये चार संकल्प धारण करने आवश्यक हैं। प्रथम संकल्प है— संसार के मोह से निर्लिप्त रह कर संसार में जीवन जीना। ऐसे जीवन का ज्ञान गुरबाणी से ही प्राप्त होता है। मन में धर्म का भाव दृढ़ होता है। द्वितीय संकल्प है— मन में परमात्मा का भय धारण करना। इस भय में परमात्मा के प्रति प्रेम भी मिश्रित हो। इसे गुरु साहिब ने निर्मल भय कहा जो परमात्मा की सर्वव्यापकता से जोड़ने वाला और आनंद उत्पन्न करने वाला है। तीसरा संकल्प मन में परमात्मा से मेल की प्रबल कामना और परमात्मा से दूरी का वैराग्य होने का है। परमात्मा का ध्यान, उसके गुणों का गायन परमात्मा-प्रेम को सघन करता है, जिससे वैराग्य का भाव उत्पन्न होता है। चौथा संकल्प सहज अवस्था प्राप्त करना है। सहज अवस्था में ही परमात्मा की निकटता और कृपा प्राप्त होती है। इन चार संकल्पों को गुरु साहिब ने पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी लाव कहा। इन्हें आत्मिक जीवन के चार चरणों में विकास के रूप में भी देखा जा सकता है। इस बाणी का इतना महत्व है कि सिक्ख विवाह (अनंद कारज) के अवसर पर जब वर और वधू श्री गुरु ग्रंथ साहिब के चार फेरे लेते हैं तो इन्हीं चार 'लावां' का क्रमानुसार पाठ और गायन किया जाता है। अपनी बाणी में गुरु साहिब ने पहली बार सिक्ख के जीवन की मर्यादा भी प्रकट की :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ।।
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

इसे सिक्ख की प्राथमिक परिभाषा और योग्यता के रूप में स्वीकार किया गया है। इस शबद में गुरु साहिब ने श्वास-श्वास सुमिरन की मर्यादा भी निर्धारित की है। इसी तरह गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण को भी गुरु साहिब ने सिक्ख की मर्यादा के रूप में देखा।

श्री गुरु रामदास जी सेवा, विनम्रता, दया, परोपकार के प्रकाश-पुंज थे। श्री गुरु रामदास जी की शरण में प्रत्येक सिक्ख अपनी गति देखता है। श्री गुरु रामदास जी की शरण, अमृत रामदास सरोवर में स्नान, उनके जीवन और उनकी बाणी से प्रेरणा ग्रहण करना ही है।

गुरु-घर के समर्पित सेवक : बाबा बुड्ढा जी

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

बाबा बुड्ढा जी ऐसे अद्वितीय सिक्ख व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने आठ गुरु साहिबान के न केवल साक्षात् दर्शन किये बल्कि पाँच गुरु साहिबान का अपने कर-कमलों से अभिषेक कर उन्हें गुरुगद्दी पर विराजमान भी किया।

श्री गुरु नानक देव जी से भेंट : ऐसे महान् भाग्यशाली सिक्ख बाबा बुड्ढा जी का जन्म सन् १५०६ ई. में पिता भाई सुग्घे रंधावा और माता गौरां जी के घर, श्री अमृतसर साहिब के निकट कत्थूनंगल नामक गाँव में हुआ। बाबा जी का बचपन का नाम 'बूड़ा' था। आपका बचपन कत्थूनंगल में ही बीता। बाद में आप माता-पिता के साथ एक अन्य गाँव रमदास में आ बसे। यहीं रमदास में आपका मिलाप श्री गुरु नानक देव जी के साथ हुआ। उस समय आपकी उम्र १२ वर्ष की थी। गुरु जी बालक की बातों से इतना प्रभावित हुए कि कह बैठे कि ''तू तो बुड्ढों जैसी बातें करता है।'' तब से आप 'बाबा बुड्ढा जी' नाम से प्रसिद्ध हो गये।

जब श्री गुरु नानक देव जी अपनी उदासियां पूर्ण कर करतारपुर में आ बसे, तब बाबा बुड्ढा जी भी गुरु-चरणों में आकर सेवारत् हो गये। बाबा जी सदैव ब्रह्मचारी रहना चाहते थे, परंतु माता-पिता की इच्छा और गुरु-आज्ञा को शिरोधार्य कर बाबा जी ने गृहस्थ धर्म में प्रवेश किया। सन् १५३८ ई. में बीबी मिरोआ जी के साथ आपका विवाह हुआ। बाद में बाबा जी के यहाँ चार पुत्रों का जन्म हुआ। परिवार का लालन-पालन करते हुए भी बाबा जी निरंतर गुरु-सेवा में लगे रहे।

श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा : सन् १५३९ ई. में जब श्री गुरु नानक देव जी ज्योति-जोत समाने लगे तो श्री गुरु अंगद देव जी को 'गुरिआई' प्रदान की। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपना केंद्र खडूर साहिब में स्थापित किया तो बाबा बुड्ढा जी भी खडूर साहिब आ गये और गुरु-आज्ञा के अनुसार गुरमुखी लिपि में विद्या देने व लंगर में सेवा करने का कार्य आरंभ कर दिया। सन् १५५२ ई. में जब गुरुआई तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी को अर्पित की गई तो एक बार फिर गुरुआई की रसम बाबा बुड्ढा जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुई।

तीसरे पातशाह और बाबा जी : तीसरे पातशाह ने गोइंदवाल साहिब को अपना केंद्र बनाया तो बाबा बुड्ढा जी खडूर साहिब से गोइंदवाल साहिब आ गये। इसी समय श्री गुरु अंगद देव जी के पुत्र दातू ने गुरुगद्दी पर अपना विरासती हक जताते हुए क्रोध प्रकट किया तो श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब छोड़ अपने गांव बासरके में चले गये और एक कमरे में दरवाज़ा बंद करके प्रभु-चिंतन में लीन होकर बैठ गये। गुरु जी ने वचन किया कि जो कोई भी कमरे का दरवाजा खोलने-खुलवाने का प्रयास करेगा वह गुरु-द्रोही होगा। ऐसे समय में

**१/३३८ स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

बाबा बुड्ढा जी ने सूक्ष्म सूझ-बूझ से काम लिया और कमरे की पिछली दीवार में सेंध लगाकर अंदर चले गये। गुरु-वचनों का सम्मान भी किया और गुरु जी को मनाकर गोइंदवाल साहिब भी ले आये ।

गोइंदवाल साहिब में ऊँच-नीच, छूआछूत के विरुद्ध जब सांझी बावली (बाउली) का निर्माण प्रारंभ किया गया तो उसकी नींव श्री गुरु अमरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी से रखवाई और बावली का निर्माण करवाने की सारी जिम्मेदारी भी बाबा बुड्ढा जी को ही सौंप दी।

चौथे पातशाह एवं बाबा जी : जब चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी सन् १५७४ में गुरुगद्दी पर विराजमान हुए तो उनका रसम भी बाबा बुड्ढा जी ने की। श्री गुरु अमरदास जी का अंतिम संस्कार भी बाबा जी ने अपने हाथों से किया। श्री गुरु रामदास जी ने जब श्री अमृतसर साहिब नगर की स्थापना की तो अमृत-सरोवर की खुदाई बाबा जी के हाथों आरंभ करवाई। अमृत-सरोवर के निर्माण में बाबा जी गुरु जी के अंग-संग रहे। बाबा जी परिक्रमा में एक बेर के नीचे बैठ कर काम की देख-रेख किया करते । यह बेर आज भी श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में मौजूद है और 'बेर बाबा बुड्ढा जी' नाम से प्रसिद्ध है।

पंचम पातशाह की सेवा में : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सन् १५८१ में गुरुगद्दी पर विराजमान हुए तो परंपरा अनुसार गुरुआई की रसम एक बार फिर बाबा बुड्ढा जी के करों से सम्पन्न हुई। पंचम पातशाह ने श्री हरिमंदर साहिब और श्री अमृतसर साहिब नगर के विकास का सारा कार्य बाबा बुड्ढा जी को सौंप दिया। सन् १६०४ में जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया तो बाबा जी को पहला ग्रंथी नियुक्त किया गया । बाबा जी ने प्रथम प्रकाश किया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से पहला पवित्र 'वाक' (हुकमनामा) पढ़कर संगत को सुनाया।

छठम पातशाह के काल में बाबा बुड्ढा जी : श्री गुरु अरजन देव जी और माता गंगा जी के घर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म का श्रेय भी अकाल पुरख ने बाबा बुड्ढा जी की प्रार्थना को बख्शा । गुरु पंचम पातशाह की शहादत के पश्चात् श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की 'गुरुआई की रसम' भी बाबा जी ने ही की। छठे पातशाह ने जब श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना की तो उन्होंने हर क्षेत्र में अपने शिक्षक रहे बाबा बुड्ढा जी से नींव रखवाई और श्री अकाल तख्त साहिब के निर्माण की जिम्मेदारी सौंप कर बाबा जी को सम्मानित किया । गुरु जी को मीरी-पीरी की दो कृपाणें भी बाबा जी ने ही पहनाई।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर के किले से छुड़वा कर लाने में भी बाबा बुड्ढा जी की विशेष भूमिका थी। इसी समय सन् १६२१ ई. में श्री गुरु तेग बहादर जी और सन् १६३० ई. में श्री गुरु हरिराय जी का जन्म हुआ और बाबा जी को दो भावी गुरु साहिबान के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ ।

अकाल प्रस्थान : गुरु-घर के अति निकटवर्ती और अनन्य सेवक बाबा बुड्ढा जी सन् १६३१ ई. में रमदास में १२५ वर्ष की आयु भोग कर प्रभु-चरणों में जा बिराजे । श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बाबा जी के अंतिम समय बाबा जी के पास उपस्थित रहे और बाबा जी का अंतिम संस्कार अपने हाथों से किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-डॉ. मनजीत कौर**

गुरबाणी का पावन फरमान है :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै।।
गुर बिनु सुरति न सिधि
गुरू बिनु मुकति न पावै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९९)

अर्थात् (पूर्ण) गुरु के बिना अज्ञानता का अंधेरा दूर नहीं हो सकता। गुरु के बिना जीवन-युक्ति तथा जीवन-मुक्ति भी सम्भव नहीं है। यही नहीं, गुरबाणी आशयानुसार सतिगुरु ज्ञान रूपी सुरमा (अंजन) नेत्रों में डालकर, अन्त:करण से अज्ञानता का अंधकार मिटा कर ज्ञान का प्रकाश करता है, यथा :

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ।।
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२४)

गुरबाणी में गुरु की तुलना 'पारस' से भी की गई है। जैसे पारस का स्पर्श पाकर लोहे जैसी धातुएं सोने में परिवर्तित हो जाती हैं, वैसे ही गुरु की संगत विकारी हृदयों को भी रूपान्तरित कर देती है।

ठीक ऐसी ही मिसाल हमें बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जीवन से मिलती है। उनके द्वारा अनेक शक्तियों के मालिक होते हुए भी सच्चे मार्गदर्शन के बिना इनका प्रयोग किसी भी आशय से मानव हित में नहीं हो रहा था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ साक्षात्कार होने से उनके जीवन में इंकलाबी मोड़ आया।

जन्म : बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म २७ अक्टूबर, १६७० ई. को पुंछ जिले के राजौरी नामक गांव में हुआ। आपके पिता का नाम श्री रामदेव भारद्वाज था, जो कि एक राजपूत किसान थे। इनकी माता का नाम रामदेवी था। माता-पिता ने इनका नाम 'लछमण देव' रखा। कुछ स्रोतों में 'लछमण दास' नाम का जिक्र भी आता है। बचपन में ही आपने घुड़सवारी तीरंदाजी, कुश्ती तथा तेग चलाने की कला सीखी।

लछमण देव से माधोदास वैरागी : आप शिकार खेलने जाते थे। एक बार आपके तीर से एक गर्भवती हिरनी का शिकार हो गया। आपने अपनी आँखों के सामने उस हिरनी को अपने गर्भ में पल रहे बच्चों सहित तड़प-तड़प कर मरते हुए देखा। इस घटना ने लछमण देव को विचलित कर दिया और उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। तदुपरांत आपने पहले वैरागी साधु जानकी प्रसाद, तत्पश्चात् साधु रामदास और फिर योगी औघड़ नाथ से रिद्धि-सिद्धि (करामाती शक्तियां) व योग एवं तंत्र-विद्या सीखी। फिर माधोदास वैरागी नामकरण

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

करवाकर महाराष्ट्र के नांदेड़ नामक स्थान पर उन्होंने अपना मठ स्थापित कर लिया। वहाँ आप जनसाधारण पर अपना करामाती प्रभाव जमा कर उन्हें अपने अधीन कर लेते। यह सिलसिला काफी वर्षों तक चलता रहा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मिलाप : १७०८ ई. में जब गुरु साहिब नांदेड़ पहुंचे तो माधोदास वैरागी ने अपनी तांत्रिक शक्तियां गुरु जी पर भी आज़माना चाहीं मगर उनकी किसी भी तंत्र-मंत्र-विद्या का गुरु जी पर प्रभाव न हुआ। अहमद शाह बटालवी अपनी रचना 'तारीख-ए-हिंद' के एक अध्याय में लिखता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ माधोदास वैरागी की उसके मठ नांदेड़ में निम्नलिखित वार्तालाप हुई :—

माधोदास : आप कौन हो?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : जिसे तुम जानते हो!

माधोदास : मैं क्या जानता हूं?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : इस पर विचार करो!

माधोदास : क्या आप गुरु गोबिंद सिंघ जी हो?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : हां!

माधोदास ने निवेदन किया कि ''मैं आपकी शरण में हूं। मैं आपका 'बंदा' (शिष्य) हूं।'' गुरु-मिलाप ने माधोदास के जीवन में महान क्रांति ला दी।

माधोदास से बाबा बंदा सिंघ बहादुर : शरण में आते ही गुरु साहिब ने उन्हें अमृत-पान करवा कर खालसा पंथ में शामिल किया तथा नाम 'बंदा सिंघ' रखा। उन्हें उनका कर्तव्य-बोध करवाया कि देश में लाखों बेगुनाहों पर हो रहे अत्याचारों, जुल्मों के चलते तुम्हारा वैराग्य धारण करना शोभनीय नहीं है और ऐसे कार्य एक वीर, अदम्य साहसी पुरुष को शोभा नहीं देते। सन् १७०८ के सितंबर माह में बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने गुरु जी की संगत में रहकर कुछ दिन खालसा पंथ की मर्यादा ग्रहण की और गुरबाणी तथा गुरु-इतिहास श्रवण किया। श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब, साहिबजादों तथा गुरु के प्यारे सिंघों की अद्वितीय शहीदी-गाथा सुनकर उनका खून खौल उठा।

गुरु-आज्ञा से पंजाब को कूच : गुरु जी ने उन्हें आशीष देकर अपने तरकश से पांच तीर प्रदान किए तथा पाँच प्रमुख सिंघों— भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज सिंघ, बाई दया सिंघ तथा भाई रण सिंघ सहित २० अन्य सिंघ उनकी सहायतार्थ दिए। बाबा बंदा बहादुर को खालसा फौज का जत्थेदार मनोनीत किया। साथ ही एक नगाड़ा, ध्वज, कुछ हुकमनामे लिखकर उनकी सहायता करने हेतु संगत को आदेश-स्वरूप प्रदान किए। गुरु जी के चरणों में नत्मस्तक हो आशीर्वाद लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब की ओर कूच किया। उनका मुख्य उद्देश्य जालिमों से बदला लेना, मुगल राज्य का अंत कर पंजाब की स्वतन्त्रता को बहाल करना था।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का विजयाभियान : पंजाब की ओर प्रस्थान करते ही गुरु जी द्वारा जारी हुकमनामे पंजाब भर के सिक्खों को भेजे गए। फलस्वरूप शीघ्र ही बहुत बड़ी गिनती में सिक्ख उनके पास पहुंच गए। जल्दी ही फौज

की गिनती हज़ारों तक पहुंच गई। फौज की विशेषता इतिहासकारों के अनुसार यह थी कि उनमें सिक्खों के अतिरिक्त हिंदू, मुसलमान, राजपूत, जाट तथा अनेक वर्गों के लोग भी मुगलों के अमानवीय अत्याचारों से त्रस्त होकर जालिमों का नाश करने हेतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर के झण्डे तले एकत्र हो गए थे।

२६ नवंबर, १७०९ ई. को बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिंघों की फौज सहित सरहिंद की ओर कूच किया। सर्वप्रथम 'समाणा' नामक स्थान पर पहुंचे, जहां गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का निवास था। सिक्ख सेना ने २४ घण्टे के अंदर ही समाणा पर कब्जा कर लिया। तत्पश्चात् बाबा जी ने शाहबाद, ठसका, मुस्तफाबाद आदि शहरों पर खालसाई निशान साहिब झुला दिए। खालसा फौज का विजयाभियान जारी रहा। उसने 'कपूरी' नामक कसबे पर कब्जा किया। कादम-दीन को उसकी करनी का फल चखा कर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने 'साढौरा' की ओर कूच किया। वहां के शासक ने गुरु जी के प्रिय सिक्ख पीर बुद्धू शाह की हत्या की थी। उसे उसकी करनी का फल चखा कर बाबा जी ने मुखलिसगढ़ नामक किले को फतह किया।

सरहिंद-फतह : १२ मई, १७१० ई. को सरहिंद के सूबेदार वजीर खान के नेतृत्व वाली मुगल सेना तथा बाबा बंदा सिंघ बहादुर की कमान वाली सिक्ख फौज का चपड़चिड़ी नामक स्थान पर घमासान युद्ध हुआ। सरहिंद वो स्थान है, जहाँ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जिगर के टुकड़े छोटे साहिबजादों को जालिम सूबेदार वजीर खान ने दीवारों में जिंदा चिनवा दिया था और इसी स्थान पर माता गुजरी जी ने भी शहादत प्राप्त की थी। वजीर खान को उसके जुल्मों की सजा देने की अभिलाषा हर सिक्ख के मन में थी। खालसा फौज ने सरहिंद की फौज को बुरी तरह से परास्त किया। वजीर खान मारा गया। गुरु-परिवार के द्रोही सुच्चा नंद, जिसकी साहिबजादों को शहीद करवाने में विशेष भूमिका रही थी, की हवेली को भी मलबे का ढेर बना दिया गया। प्रसिद्ध कवि अल्लाह यार खान योगी 'सरहिंद' की स्थिति पर लिखता है :

जोगी जी इसके बाद हुई थोड़ी देर थी।
बस्ती सरहिंद की ईंटों का ढेर थी।

इस प्रकार बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अत्याचारियों का अंत कर गुरु साहिब के उन वचनों को सत्य साबित कर दिखाया, जो उन्होंने औरंगजेब को 'जफरनामा' में लिखे थे :

चिहा शुद कि चूं बच्चंगा कुशतह चार।।
कि बाकी बिमांदअसत पेचीदह मार।।

अर्थात् क्या हुआ अगर तूने मेरे चार पुत्रों को यातनाएं देकर शहीद कर दिया है, अभी कुण्डली वाला सांप अर्थात् मेरा खालसा जीवित है।

खालसा राज की स्थापना : बाबा बंदा सिंघ बहादुर सरहिंद-फतह के पश्चात् पश्चिम की ओर अग्रसर हुए तथा जलालाबाद, जलंधर, रिआड़की आदि शहरों को जीतते हुए लाहौर के निकट जा पहुँचे। अब लगभग सारे पूरबी पंजाब पर सिक्खों का राज्य स्थापित हो चुका था। आपके जीते हुए इलाकों में राज-प्रबंध की

व्यवस्था बाबा बंदा सिंघ बहादुर की दूरदर्शिता की परिचायक है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने साढौरा तथा नाहन के मध्य स्थित मुखलिसगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और इसे 'लोहगढ़' नाम दिया। इसी स्थान पर प्रतिदिन बाबा जी दीवान लगाते और लोगों की दुख-तकलीफें सुनते तथा उनका निवारण करते।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसा राज का एक सिक्का भी जारी किया। इसकी कीमत मुगलों के सिक्के से ज्यादा रखी गई अर्थात् सच्चे पातशाह की कृपा से यह सिक्का दो जहान में चलाया है। यह समस्त दान देने वाली श्री गुरु नानक पातशाह की कृपाण है तथा शाहे-शहनशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की फतह है। बाबा जी ने अपनी मोहर बनवाई। उस पर खुदवाया :

देगो तेगो फतहि ओ नुसरत बेदरंग।
याफत अज नानक गुरु गोबिंद सिंघ।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में स्थापित यह पहला खालसा राज्य था जो कि पूर्ण रूप से धर्म-निरपेक्ष था। इस राज्य का प्रमुख उद्देश्य विश्व-शांति कायम करना था। बाबा जी की दूरदर्शिता एवं गहरे चिन्तन का एक विलक्षण उदाहरण जागीरदारी-प्रथा का उन्मूलन करना था। उस समय अधिकांश जागीरदार मुसलमान थे, जो लगान एकत्र करने के बहाने आम जनता पर जुल्म करते थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्खों द्वारा जीते गए इलाकों में भूमिहीन कृषकों को भूमि का मालिक घोषित कर दिया। गरीब-मजदूर, हल चलाने वाले जमींदार बन गए। इससे पंजाब की राजनीतिक व्यवस्था के साथ-साथ आर्थिक व्यवस्था में भी बहुत सुधार आया। पंजाब में आर्थिक समृद्धि एवं खुशहाली बाबा बंदा सिंघ बहादुर की देन कही जाए तो कोई अतिकथनी नहीं होगी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की अद्वितीय शहादत : जब मुगल बादशाह को सिक्खों की विलक्षण शक्ति एवं कारनामों की खबर हुई तो वह बहुत बड़ी फौज लेकर पंजाब की ओर आया और उसने फिर से ये इलाके अपने कब्जे में ले लिए। इस दौरान सैकड़ों सिक्ख शहीद हो गए। १८ फरवरी, १७१२ ई. को लाहौर में बहादुर शाह की मृत्यु हो गई तो बाबा जी ने फिर से कुछ इलाकों पर विजय हासिल की। फरवरी, १७१३ ई. में दिल्ली तख्त पर बैठे बादशाह फरुख्सियर ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर औऱ सिक्खों के खिलाफ दमन-चक्र चलाया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को गुरदास नंगल की गढ़ी में भारी संख्या में मुगल सेना ने घेर लिया। यह घेरा ८ महीने जारी रहा।

७ दिसंबर, १७१५ ई. को बाबा जी को ७४० सिंघों सहित गिरफ्तार कर लिया गया और लोहे के पिंजरे में बंद कर जुलूस की शक्ल में दिल्ली ले जाया गया। जेल में लगभग छः महीने तक कठोर यातनाएं दी गईं। फिर जालिमों द्वारा कत्लेआम शुरू हुआ। लगभग १०० सिक्खों को प्रतिदिन शहीद किया जाता। पहले उन्हें धर्म-परिवर्तन हेतु कहा जाता। मना करने पर अनेक यातनाएं देकर शहीद कर दिया जाता। गुरु के प्यारे सिक्ख हंसते-हंसते शहीदी प्राप्त कर गए। ९ जून,

१७१६ ई. को बाबा बंदा सिंघ बहादुर को शहीद किया गया। उन्हें शहीद करने से पहले उनके हाथ में कटार दी गई और उनके लगभग तीन वर्षीय पुत्र अजै सिंघ को उनकी गोद में देकर उसे कत्ल करने को कहा गया। इनकार करने पर जालिमों ने बाबा जी के नाखून उखाड़े, गर्म जंबूरों से शरीर का मांस नोचा, उनकी दोनों आँखें गर्म सलाखों से निकाल दी गईं। जब्र एवं जुल्म की इंतहा कि उनके पुत्र का धड़कता हुआ दिल (कलेजा) निकालकर उनके मुँह में ठूंसा गया। उधर जब्र की हदें पार थीं और इधर बाबा बंदा सिंघ बहादुर की ओर से सब्र की समस्त हदें पार थीं। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने 'उफ' तक नहीं की। गुरु साहिब की अपार बख्शिश के फलस्वरूप खालसा पंथ की आन-बान-शान को बरकरार रखते हुए वे अमर शहीदी प्राप्त कर गए।

ऐसे युगपुरुष, महान क्रांतिकारी, अद्वितीय शहीद, सिक्ख पंथ की उज्जवल हस्ती, महान कर्मयोगी, विलक्षण योद्धा बाबा बंदा सिंघ बहादुर का अदम्य उत्साह और विश्वास से भरपूर विस्मयकारी जीवन रहती दुनिया तक सिक्ख पंथ की अगुआई करता रहेगा। शत्-शत् नमन् ऐसे युगपुरुष को! इनके साथ शहीद होने वाले समस्त सिंघ-सिंघनियों एवं बच्चों को कोटि-कोटि प्रणाम!

जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर एवं उनके साथी पकड़े गए तब उन सबको मौत की सजा सुना दी गई। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथियों में नौ-दस साल का एक लड़का भी था। उसकी माँ को जब पता चला तो वह दौड़ी-दौड़ी वहाँ आई तथा रतन चंद दीवान के मार्फत फरुख्सिर तथा सैयद अब्दुल्ला खान तक पहुंच कर ली। उसने उनसे कहा कि ''मेरा पुत्र असल में सिक्ख नहीं है। इन सिक्खों ने उसे जबरदस्ती अपने साथ मिला लिया है।'' दीवान की सिफारिश पर उस लड़के की रिहाई का आदेश जारी कर दिया गया। जब उसे रिहा करने लगे तो उसने कहा, ''मेरी रिहाई का कारण मुझे बताया जाए!'' जवाब मिला, ''तेरी माँ ने कहा है कि तू सिक्ख नहीं है . . . ।'' इस पर उस लड़के ने आक्रोश में आकर कहा, ''मेरी माँ झूठ बोलती है! मैं दिलो-जान से अपने गुरु का सिक्ख हूं! मैं जाँनिसार सिक्खों में से एक हूं!''

जिस कौम के बच्चों में ऐसा जज्बा हो उस कौम को भला कौन झुका सकता है! कौन हरा सकता है!!

मौत तो सब को ही आनी है, मगर कुर्बानी वाली मौत केवल वीर पुरुषों को ही नसीब होती है। इस संदर्भ में गुरबाणी का पावन फरमान है :

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है
जो होइ मरनि परवाणो।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५७९)

टैहल करत कौ महल पुचावौ।

*-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

ज्ञानी गिआन सिंघ की कलम द्वारा लिखित खालसे के इन शब्दों— *''टैहल करत कौ महल पुचावौ''* में नवाब कपूर सिंघ जी की संगत की सेवा से लेकर राज की सेवा तक का सफ़र समाया हुआ है। सेवा के जज़्बे के कारण ही आदर्श पंथक नेता बना जा सकता है। जब तक पंथ का नेतृत्व सेवा-सुमिरन वाली शख़्सियतों के हाथ में रहे तो पंथ चढ़दी कला में रहता है। सेवा की भावना के लिए नेतृत्व दिशाहीन हो जाता है।

सिक्ख धर्म में सेवा का संकल्प जितना महान है उतना ही सेवा का घेरा विशाल है। सेवा, जैसे कि संगत के जोड़े साफ़ करने, बर्तन साफ़ करने, पंखा डुलाने के अलावा देश-कौम, पंथ का योग्य ढंग से नेतृत्व करना भी अपने आप में बड़ी महान सेवा है।

नवाब कपूर सिंघ सिक्ख पंथ की ऐसी गौरवमयी शख़्सियत हैं, जिन्हें लंगर के लिए जल ढोने, संगत के जूठे बर्तन साफ करने, पंखा डुलाने, घोड़ों के रखरखाव से लेकर लंबें समय तक सिक्ख पंथ के एक अनुभवी नेता के तौर पर, धार्मिक, राजनैतिक नेतृत्वकर्ता के तौर पर सेवा करने का मान हासिल हुआ।

यह ''टैहल करत कौ महल पुचावौ'' घोड़ों की सेवा से लेकर नवाबी तक का जो सफ़र है, यह गुरमति सेवा के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व है। यह गुरु- इतिहास की अमीर परंपराओं का साक्षात्कार है। गुरु- घर में सेवा का बहुत ऊँचा व शुद्ध स्थान है। सेवा वह बीज है जिसके फलीभूत होने से चँवर, छत्र, तख़्त के अधिकारी बना जा सकता है, जिससे दीन- दुनी की पातशाही हासिल हो जाती है।

सेवा का संकल्प भाई लहिणा जी ने साकार किया। उन्होंने गुरु नानक पातशाह की दिन-रात बिना धूप-छाँव, सर्दी-गर्मी की परवाह किए सेवा की। वे गुरु-दर पर स्वीकार हो गए। भाई लहिणा जी से श्री गुरु अंगद देव जी बन दीन-दुनी के मालिक बन गए। श्री गुरु अमरदास जी सेवा कर निमाणों का मान, निरालंब का आलंब, बेसहारों की ओट आदि बख़्शिशें प्राप्त कर तख़्त, चँवर, छत्र के मालिक बने।

इस प्रकार की सेवा की आदर्श मिसालों से गुरु-इतिहास भरा पड़ा है। सेवा के इस संकल्प को यदि व्यावहारिक तल पर देखें तो इसके पीछे गुरु साहिबान की दीर्घ दृष्टि प्रत्यक्ष नज़र आती है। गुरु साहिबान ने गुरबाणी में सेवा करने का भरपूर उपदेश दिया और स्वयं सेवा के आदर्श को जीवन-यापन बना कर गुरसिक्खों का मार्गदर्शन किया। सेवा के संकल्प के बिना न तो जीवन

*संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४

परोपकारी बन सकता है और न ही धर्म, देश, कौम के लिए कर्मयोद्धा बना जा सकता है। सदियों की भारत की ग़ुलामी की दास्तान के कारणों में से मानव-सेवा की अनुपस्थिति को एक बड़ा कारण माना जा सकता है। सेवा— गुरु-घर में संगत के जोड़े झाड़ना, बर्तन माँजना, पंखा डुलाना से शुरू होकर मज़लूमों का हाथ थामने व देश की सरहदों की सुरक्षा के लिए कर्मनिष्ठ तक का गुरमति आदर्श पालती है।

गुरु साहिबान के पदचिन्हों पर चलते हुए गुरु के सिक्खों ने सेवा-सुमिरन की बुलन्दियों को छूकर सिक्ख इतिहास को रौशन किया है।

सिक्ख इतिहास में नवाब कपूर सिंघ को नवाबी मिलने के समय का वृत्तांत उस समय के सिक्खों की निष्पक्षता और विनम्रता जैसे गुणों से भरपूर उच्च आध्यात्मिक अवस्था को प्रकट करता है, जहाँ प्रत्येक सांसारिक रुतबा गुरसिक्खी से निम्न समझा जाता है। वे रूहें अरदास के शब्द 'सिक्खां नूं सिक्खी दान' को अनुप्रयुक्त रूप में ला चुकी रूहें थीं, इसलिए सांसारिक रुतबे उनके लिए तुच्छ थे।

हम देखते हैं कि खालसा का दीवान सजा हुआ है। कोई सिंघ बाणी पढ़ रहा है, कोई सेवक सेवा कर रहा है। कुछ गुरमुख प्यारे सिंघ खालसा पंथ की चढ़दी कला और सरबत्त का भला के खालसयी आदर्श को रूपमान करने के लिए गुरमति विचारें कर रहे हैं। इतने में भाई सुबेग सिंघ नवाबी की पोशाक और नज़राना लेकर खालसा के सामने आते हैं। अब जिन्हें दीन-दुन्नी के मालिक पातशाहों के पातशाह श्री गुरु नानक साहिब ने पातशाही प्रदान की, जिनके अंदर सरवंशदानी पिता, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ''खालसा होइओ खुद खुदा'' वाला स्वाभिमान भरा हो, वे मुगलों द्वारा भेजी नवाबी को कैसे स्वीकार करते? यह था गुरु-आस्था और पंथ के आत्मसम्मान का पक्ष। दूसरा पक्ष था— इस नवाबी की खिलअत को लेकर भाई सुबेग सिंघ के माध्यम से शरण आए मुगलों की नवाबी को स्वीकार कर ''जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै'' का विरुद रखना। खालसा पंथ ने जब दीर्घ विचार कर मानवता के कल्याणार्थ पंथक शक्ति को मज़बूत करने के संयोग के तौर पर इस नवाबी को स्वीकार करने का विचार बना लिया तो अगला मसला था कि यह नवाबी की पोशाक दी किस सिक्ख को जाये। जिस भी सिक्ख का नाम तजवीज़ किया जाता, वह नवाबी लेने से मना कर देता :

जिसै देत सो लेवै नाहीं।
इतक मरतबा चहयो न काही।
(पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ ६५४)
सभी कहें :
हम राखत पातशाही दावा...
पातिशाही छड किम लहैं निबाबी।
(श्री गुरु पंथ प्रकाश कृत स. रतन सिंघ भंगू, पृष्ठ २८५)

यहाँ पर एक नुक्ता साझा करते चलें कि सिंघ नवाबी लेने से इनकारी इसलिए थे, क्योंकि यह मुगलों ने भेजी थी। दूसरी तरफ यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी थी, जिसके पात्र गुरु की नवाज़िश के बिना बन पाना संभव नहीं था। स. रतन सिंघ

(भंगू) इसकी ज़िम्मेदारी के बारे में इस प्रकार लिखते हैं :

दै खिलत एती गल कही,
पुशाक न जानयो यहि निबाबी भई।
इसी साथ होगु लिखी जगीर,
इसी साथ होगु मुलक ततबीर।
इह है निबाबी अद्ध सूबेदारी,
उसै मिलैगी रय्यत सारी।
शाही प्रवाने उस नाइ आवगु,
उही वंड सभ लोगन खुलावगु।

इसलिए :

सूर, सती, दाता, हठी, तपी, जपी जो कोइ।
देवयो उसै बिचार कै जो इस लाइक होइ।
(श्री गुरु पंथ प्रकाश कृत स. रतन सिंघ भंगू, पृष्ठ २८३-८४)

नवाब कपूर सिंघ सुमिरन और संगत की सेवा कर इस नवाज़िश के पात्र बन चुके थे। इस बड़ी ज़िम्मेदारी को सँभालने के लिए जिस सेवा-सुमिरन वाली शख्सियत की ज़रूरत थी उसके लिए खालसा पंथ की नज़रों में सर्वाधिक उचित नवाब कपूर सिंघ ही थे। ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि फिर सिंघों ने विचार किया :

अरज दीन पर ग़ौर सु करीए।
किसी टैहलूए के सिर धरीए।
तथै सिंघ इक पढ तो बाणी।
आई तुक तब यह मन भाणी।

यथा :

टहल महल ता कउ मिलै
जा कउ साध क्रिपाल।।

तात्पर्य : सेवा-भक्ति का मौका उसी को मिलता है जिस पर गुरु दयालु हो।

तबै सिंघ इक बोलयो ऐसे।
सबद गुरू यहि भाखत जैसे।
टैहल करत कौ महल पुचावौ।
मानो हुकम न देर लगावौ।
कपूर सिंघ था पक्खा करतो।
युत उतशाहि इतै उत फिरतो।
ब्रिक गोत फाजुला पुर को।
तिस हित हुकम चढयो तब गुरू को।
(पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ ६५७)

इस प्रसंग में भाई संतोख सिंघ ने बहुत ख़ूबसूरत ढंग के साथ नवाब कपूर सिंघ को नवाबी मिलने का दैवी अनुसरण पेश करते हुए इस नवाबी को गुरु की नवाज़िश बताया है। सिंघों ने विचार किया कि यह नवाबी किसी टहिलुए (सेवक) को सौंपी जाए। जब नवाबी देने के बारे में विचार-चर्चा चल रही थी तो उसी समय एक सिक्ख गुरबाणी का पाठ कर रहा था। पाठ करते समय उसी वक्त यह पंक्ति आई :

टहल महल ता कउ मिलै
जा कउ साध क्रिपाल।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २५५)

क्योंकि जितनी बड़ी वस्तु या पदार्थ हो, उसे सँभालने के लिए बर्तन भी उतना ही बड़ा चाहिए होता है। नवाब कपूर सिंघ सेवा-सुमिरन कर बड़ी पंथक ज़िम्मेदारी को गुरमति परंपराओं के अनुसार निभाने के योग्य बन चुके थे, जो उस वक्त अति उत्साह के साथ संगत को पंखा डुलाने की सेवा कर रहे थे। ''टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध क्रिपाल।।'' मानो श्री गुरु ग्रंथ

साहिब जी का नवाब कपूर सिंघ की तरफ ही इशारा था। गुरु के हुक्म की तामील करते हुए गुरु ख़ालसा का हुक्म हुआ कि नवाबी सरदार कपूर सिंघ को दी जाये।

ख़ालसा के हुक्म पर नवाब कपूर सिंघ ने अति नम्रतापूर्वक कहा कि यह नवाबी मुझे खालसा पंथ प्रदान कर रहा है, इसलिए मैं सिंघों का नवाब कहलवाऊँगा, लेकिन यदि यह नवाबी तुर्कों की कही जाए, तो मुझे मंज़ूर नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि मैं नवाबी तो स्वीकार करूँगा यदि पांच सिंघ अपने चरणों के साथ स्पर्श करवा दें और मेरे पास से, जो मैं पंथ की तथा घोड़ों की दाना-पानी की सेवा कर रहा हूँ, वह की नवाबी लेने के बाद भी मुझे उसी प्रकार ही करने दी जाये। पंथ ने यह बात स्वीकार कर पाँच सिंघों के चरणों के साथ खिलअत स्पर्श करवा दी तो नवाब कपूर सिंघ ने नवाबी की पोशाक पहन ली, पगड़ी सजा ली। सेवा- सुमिरन का फल है ही ऐसा, जो राई से पहाड़ बना देता है। ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं :

तबै ख़ालसे कर अरदासा।
दयो खिलत तिह सिर धर खासा।
पर तिन बचन एहु तब कीआ।
मै नुवाब सिंघन का थीआ।
जे तुरकन की कहो नुवाबी।
सो मनजूर न मोकहु फाबी।...
पंथ हुकम जब दीनो सारे।
लेहु संभार नवाबी पिआरे।
पाँच सिंघन को चरनी लाकै।
पाछे पहिरयो खिलत उठा कै।
जब दसतार नवाबी साजी।
तेज कला अधिकै मुख भ्राजी।...
सिंघन सभ वालस पहिनाओ।
राई ते कर मेरु दिखायो।
(पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ ६५५)

नवाबी हासिल करने के बाद बड़ा लम्बा समय नवाब कपूर सिंघ ने मुश्किल भरे दौर में सिक्ख पंथ का नेतृत्व किया। खालसा पंथ को दो दलों— 'बुड्ढा दल' और 'तरुणा दल' में विभाजित कर प्रबंध को और सुचारू रूप प्रदान किया। पहले घल्लूघारे के समय सिक्खों का भारी नुकसान हुआ, फिर भी नवाब कपूर सिंघ ने नेतृत्व करते हुए पंथ को चढ़दी कला में रखा। पंथक-शक्ति को और मज़बूत प्रदान करने के लिए १७४८ ई. में श्री अकाल तख़्त साहिब पर 'सरबत्त खालसा' बुला कर फ़ौजी जत्थेबंदी 'दल खालसा' की स्थापना की और सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को इसका प्रमुख नियुक्त किया।

नवाबी के इस उपरोक्त ऐतिहासिक प्रसंग से पता चलता है कि सिक्ख पंथ में सेवा का कितना महान स्थान है। हमारी परंपराएं कितनी अमीर हैं। पंथ में पंच-प्रधानी परंपरा का कितना आदरणीय स्थान रहा है। वर्तमान में इन ऐतिहासिक प्रसंगों से शिक्षा लेकर ही पंथ की चढ़दी कला वाला सर्वकल्याणकारी राज्य स्थापित किया जा सकता है।

सुलतान-उल-कौम
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

नवाब सरदार कपूर सिंघ और सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का नाम सिक्ख योद्धाओं और शूरवीरों में अति विशेष तथा सम्माननीय स्थान रखता है। शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के तीसरे सरदार (प्रमुख) नवाब कपूर सिंघ द्वारा इस फानी संसार को अलविदा कह देने के बाद सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को पंथ का जत्थेदार (प्रमुख) स्वीकार किया गया। उनका जन्म ३ मई, सन् १७१८ ई. को पिता सरदार बदर सिंघ तथा माता जीवन कौर के घर गाँव आहलू, जिला लाहौर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उन्हें 'सरदार जस्सा सिंघ कलाल' भी कहा जाता था, क्योंकि वे कलाल सिक्ख उप-समुदाय से संबंधित थे।

एक संदर्भ के अनुसार सरदार बदर सिंघ के दादा का नाम सरदार साधू सिंघ या सद्दा सिंघ था। सरदार जस्सा सिंघ अभी छोटी आयु में ही थे, जब इनके सिर पर से पिता का साया उठ गया। फिर माता जीवन कौर इन्हें लेकर सिक्ख संगत सहित दिल्ली आ गईं और माता सुंदरी जी का आशीर्वाद व स्नेह प्राप्त किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सन् १७०८ ई. में श्री हजूर साहिब (नांदेड़) में ज्योति-जोत समाने के बाद माता सुंदरी जी ने दिल्ली में रहकर खालसा पंथ की अति विकट परिस्थितियों में आगवानी की थी। उनके संरक्षण व नेतृत्व में ही सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने सिक्ख विचारधारा, गुरमति ज्ञान, आत्मिक, सामाजिक (बहुपक्षीय) शिक्षा को प्राप्त किया, भिन्न-भिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

दिल्ली से चलते समय माता सुंदरी जी ने सरदार जस्सा सिंघ को तेग, तीर-कमान, गुर्ज (सुंदर पुशाक वस्त्र, चांदी की चांब, गदा) आदि बख्शिश किए।

तदोपरांत सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया अपनी माता व मामा सरदार बाघ सिंघ हलोवालिया, करतारपुर (जलंधर) के साथ जत्थेदार नवाब कपूर सिंघ के पास पहुंच गया। नवाब कपूर सिंघ सरदार जस्सा सिंघ के स्वभाव, व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना न रह सके। उनके कहने पर माता जीवन कौर ने अपने होनहार सुपुत्र को उन्हीं के पास छोड़ दिया अर्थात् उन्हें सौंप दिया।

नवाब सरदार कपूर सिंघ ने अपनी देखरेख में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को घुड़सवारी, तेग चलाने की कला, नेजाबाज़ी, तीरंदाज़ी आदि की शिक्षा दिलाई। सरदार जस्सा सिंघ यह प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ-साथ संगत में पंखा डुलाने और बर्तन साफ करने की सेवा भी बाखूबी निभाते थे। उनके स्वभाव में सेवा करने

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

की भावना भी शामिल थी।

युवावस्था प्राप्त करने पर उन्हें नवाब कपूर सिंघ ने खंडे-बाटे का अमृत छकाकर (अमृत-पान करवाकर) सिंघ सजाया और तन-मन से सिक्ख रहित मर्यादा निभाने की ताकीद की। फिर नवाब जी ने घोड़ों को खुराक उपलब्ध कराने की सेवा भी सौंप दी। इस सेवा को भी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने तन-मन तथा लगन के साथ निभाया। आग पर तपकर ही सोना कुंदन बनता है और उनका व्यक्तित्व भी कुंदन बन रहा था। उन्होंने जत्थेदार नवाब कपूर सिंघ द्वारा छेड़े गए युद्ध-अभियानों में भाग लेना शुरू कर दिया। उनमें जोश-ओ-जज़्बा, उत्साह, हौसले की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने अपने युद्ध-कौशल एवं शूरवीरता का लोहा मनवाया। उनका नाम सुनकर शत्रु कांपने लगते थे। शीघ्र ही सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया उस समय के महान सिक्ख सरदारों अर्थात् सिक्ख जरनैलों की प्रथम पंक्ति में शामिल हो गए।

सन् १७३९ ई. में नादिर शाह ने पंजाब सहित उत्तर भारत के बड़े भूभाग पर हमला कर दिया। करनाल के युद्ध में उसने मुगलों को पराजित कर दिया और फिर दिल्ली (जहानाबाद) में लूटपाट मचा दी। उसने बेशकीमती म्यूर सिंहासन, कोहिनूर हीरा, दरिया-ए-नूर हीरा सहित सरकारी खज़ाने को लूट लिया। इस दौरान खालसा दल के सभी समूह इकट्ठा हुए तथा प्रस्ताव पारित किया कि नादिर शाह को सबक सिखाया जाए, क्योंकि उसने दिल्ली में लूटपाट, कत्लोगारत फैलाई है और अब हिंदुस्तानी युवतियों एवं स्त्रियों को गुलाम बनाकर ले जा रहा है। अपने देश में ले जाकर वह उन्हें बेचेगा। उस समय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की आयु २१ वर्ष थी। उन्होंने सभी गुलाम औरतों व युवतियों को उसके चंगुल से छुड़वाने के लिए छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) की योजना बनाई। उन्होंने अन्य सिक्ख जत्थेबंदियों के साथ मिलकर नादिर शाह की फौज़ पर हमला कर दिया और गुलाम महिलाओं सहित सभी गुलामों को उसके चंगुल से मुक्त करवा लिया। सभी को हिफाजत व पूरे सम्मान के साथ उनके परिवारों के सुपुर्द कर दिया।

सरदार आहलूवालिया ने कई युद्धों में हिस्सा लिया और यह सिद्ध कर दिया कि वे उच्च कोटि के योद्धा व नेता हैं। सन् १७४८ ई. में बुला गई (आयोजित) सरबत्त खालसा की बैठक में नवाब कपूर सिंघ ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। उनके अनुयायियों ने उन्हें 'सुलतान-उल-कौम' (राष्ट्र का राजा) की उपाधि प्रदान की।

दिसंबर १७४७ ई. से लेकर १७६९ ई. तक अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर नौ बार आक्रमण किया। पानीपत की तीसरी लड़ाई में उसने अवध के नवाब और रोहिल्ला के साथ मिलकर मराठों को हराया, जो १७५२ ई. में हस्ताक्षरित एक संधि के बाद दिल्ली में मुगल सिंहासन के संरक्षक बन गए तथा उत्तर भारत एवं कशमीर के अधिकांश हिस्से को नियंत्रण में ले लिया। वे पंजाब में शूरवीर सिक्खों को कभी भी अपने अधीन नहीं कर पाए।

सूरजमल्ल भरतपुर के जाट राज्य के संस्थापक थे। उन्हें २५ दिसंबर, १७६३ ई. को

दिल्ली के पास नजीब-उद-दौला ने मार डाला, जो रोहिल्ला प्रमुख था और जिसे अहमद शाह दुर्रानी ने दिल्ली में 'मीर बख्शी' व 'रीजेंट' नियुक्त किया था। सूरजमल्ल के पुत्र जवाहर सिंह ने सिक्ख सरदारों से सहायता मांगी। उसने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में ४० हज़ार सिक्ख सैनिकों के साथ मिलकर मुंहतोड़ जवाब दिया। सिक्खों ने २० फरवरी, १७६४ ई. को यमुना नदी पार की और आसपास के क्षेत्रों पर हमला किया। नजीब-उद-दौला दिल्ली वापिस लौट आया। इससे उसका भरतपुर राज्य पर दबाव कम हो गया। दिल्ली से २० कि.मी. उत्तर में बरारी घाट पर यमुना पार क्षेत्र में २० दिन तक चले युद्ध के बाद नजीब-उद-दौला को सरदार आहलूवालिया के नेतृत्व में योद्धा सिक्खों के हाथों हार का सामना करना पड़ा। वह ९ जनवरी, १७६५ ई. को लाल किले में सेवानिवृत्त हो गया और एक महीने के भीतर जांबाज़ सिक्खों ने नजीब-उद-दौला को नखास (घोड़ा मंडी) और सब्ज़ी मंडी क्षेत्रों में फिर से हरा दिया।

इतिहासकार मुंशी कन्हैया लाल की किताब 'तवारीख-ए-पंजाब' और ज्ञानी गिआन सिंघ की किताब 'राज खालसा' में दिए गए विवरणों के अनुसार अहमद शाह दुर्रानी द्वारा पकड़ी गई हिन्दू महिलाओं को बचाने का श्रेय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को दिया जाता है। एक अन्य विवरण के अनुसार मराठों को हराने के बाद अब्दाली ने हज़ारों कैदियों को पकड़ लिया। कुल मिलाकर लगभग २२ हज़ार बंदी थे, जिन्हें गुलामों के रूप में अफगानिस्तान ले जाया जा रहा था। इनमें अफगान हरमों के लिए नियत हिंदू महिलाएं भी शामिल थीं। जब सरदार जस्सा सिंघ को पता चला तो उन्होंने सतलुज नदी के निकट अफगान सेना पर हमला किया। लगभग २२ सौ पकड़ी गई हिंदू महिलाओं को बचाया और उन्हें ससम्मान उनके परिवारों को सौंप दिया। इसके बाद उन्हें बंदियों के मुक्ति-दाता के रूप में ढेर सारी प्रशंसा व प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

बड़ा घल्लूघारा के बावजूद मई महीने तक सिक्ख शूरवीर फिर से हथियारबंद हो गए थे। सरदार जस्सा सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने हरनौलगढ़ की लड़ाई में सरहिंद के अफगान फौजदार को हराया। शरद ऋतु तक सिक्खों ने इतना आत्मविश्वास हासिल कर लिया था कि वे दीवाली मनाने के लिए श्री अमृतसर साहिब में बड़ी संख्या में एकत्र हुए। अब्दाली ने उन्हें दबाने व हराने का प्रयास किया और शांति-संधि के प्रस्ताव सहित अपना एक दूत सिक्खों के पास भेजा। सिक्ख इसके हक में नहीं थे, अतः यह संधि नहीं हो सकी।

जून १७६३ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने जलंधर की ओर कूच किया और जलंधर का गवर्नर सआदत यार खान बहुत ज्यादा भयभीत हो गया। वह अपनी राजधानी से बाहर नहीं निकला। सरदार जस्सा सिंघ ने जलंधर पर कब्जा कर लिया। इसके बाद दिसंबर १७६३ ई. में उन्होंने मलेरकोटला के नवाब भीखन खान को हराया तथा उसे मार डाला। इसके बाद मोरिंडा को भी अपने अधीन कर लिया।

जनवरी, १७६४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ

आहलूवालिया के नेतृत्व में दल खालसा ने सरहिंद पर हमला कर दिया और वहां के गवर्नर जैन खान सरहिंदी को यमलोक पहुंचाकर सरहिंद पर कब्ज़ा कर लिया। सरदार जस्सा सिंघ ने जगन भरोग, फतेहगढ़ के क्षेत्रों पर भी अधिकार जमा लिया।

फरवरी, १७६४ ई. में बहादुर सिक्खों ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार खुशहाल सिंघ, सरदार तारा सिंघ गैबा, सरदार बघेल सिंघ तथा सरदार गुरबखश सिंघ की आगवानी में यमुना नदी को पार किया। उन्होंने अंबली, शामली, कांधला, मीरांपुर, देवबंद, ज्वालापुर, चंदौसी, मुजफ्फरनगर और नजीबाबाद पर विजय प्राप्त कर केसरी झंडा फहरा दिया। नजीब-उल-दौला ने सिक्खों को ११ लाख रुपए का कर (टैक्स) देकर उनके साथ शांति-संधि पर हस्ताक्षारत किए।

मार्च, १७८३ ई. में दल खालसा ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में दिल्ली की ओर कूच किया। ११ मार्च, १७८३ ई. को दल खालसा ने लाल किले पर जयकारे गुंजाते हुए प्रवेश किया और लाल किले पर केसरी झंडा फहरा दिया। शाही महल के दीवान-ए-आम में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सिक्खों द्वारा दिल्ली के सिंघ बादशाह के रूप में गद्दी पर बैठाया गया।

पराजित मुगलों ने शासक बन चुके सिंघ शूरवीरों के साथ समझौता करते हुए सिक्ख गुरुओं की याद में दिल्ली में सिक्ख गुरुद्वारों के निर्माण पर सहमति व्यक्त की। सिक्ख बहुत खुश हुए ।

इतिहासकार डॉ. हरि राम गुप्ता सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के बारे में लिखता है, ''वह एक महान योद्धा, पराक्रमी सेनापति और प्रख्यात संगठनकर्ता था। उसके शरीर के सामने हिस्से पर तलवार के कट और गोली के बत्तीस निशान थे, जबकि पीठ पर एक भी नहीं। वह शरीर से विशालकाय था, जैसे कोई पहाड़ हो। उसके नाश्ते में एक किलोग्राम आटे की रोटियां, आधा किलोग्राम मक्खन, पाव भर कूजा मिश्री और एक बाल्टी छाछ (लस्सी) शामिल थी। वह अपने शारीरिक बल व कौशल, अदम्य साहस एवं दृढ़ इच्छा-शक्ति के कारण अफगानों व मुगलों को पराजित करने में कामयाब रहा।''

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने लाहौर पर विजय प्राप्त करने के बाद सिक्ख गुरु साहिबान के नाम पर सिक्के जारी किए। महान योद्धा, गुरु-घर के सेवक, उच्च कोटि के सेनापति एवं रणनीतिज्ञ सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया नवाब सरदार कपूर सिंघ द्वारा इस फानी दुनिया को अलविदा कहे जाने के बाद शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के चतुर्थ जत्थेदार बने थे। उन्होंने बतौर जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब से सिक्ख समुदाय की आगवानी की। आखिर २० अक्तूबर, १७८३ ई. को सिक्ख समुदाय को बुलंदियों पर पहुंचाकर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया इस संसार से कूच कर गए।

सिंघ सभा लहर का उत्थान और प्रभाव

*-डॉ. गुरमिंदर सिंघ रूपोवाली**

महाराजा रणजीत सिंघ के काल के बाद पंजाब की राजनैतिक स्थिति बहुपक्षीय रूप से बदल चुकी थी। इसके साथ ही धार्मिक स्थितियां भी तेज़ी के साथ बदल रही थीं, जिस कारण सिक्ख धर्म की सबसे प्रमुख लहर 'सिंघ सभा लहर' अस्तित्व में आई। इस लहर की उत्पत्ति १८७३ ई. में हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म में फैल चुकी अनेक कुरीतियों को दूर करना और ग़ैर-सिक्ख धार्मिक लहरों के प्रभाव से ऊपर उठना था, क्योंकि ईसाई मिशनरी और आर्य समाजी बड़े स्तर पर पंजाब में पैर पसार रहे थे। बेशक उस समय निरंकारी लहर और नामधारी लहर भी वजूद में आ चुकी थीं, जो व्यक्ति-विशेष को प्रमुखता (देहधारी गुरु) तथा अन्य कई कारणों से ज़्यादा सफल न हो सकीं। डॉ. खुशवंत सिंघ इन लहरों के बारे में लिखते हैं :

''तीनों ही लहरें (निरंकारी, राधास्वामी और नामधारी) अपने सांप्रदायिक झुंड के रूप में विकसित हुईं और अपने-अपने विशेष गुरु की भक्ति एवं अपने गुप्त व रहस्यमयी धार्मिक संसारकों (संस्कारों) के प्रयोग में मस्त रहीं। जिन बुराइयों को ख़त्म करने के लिए ये लहरें शुरू की गई थीं, वे उसी तरह ही बेरोक जारी रहीं।''

सिंघ सभा लहर के उद्भव का कारण जहाँ सिक्ख धर्म में आई कुरीतियां थीं, वहीं कुछ समकालीन कारण भी थे, जिसने सिक्ख चिंतकों और पैरोकारों को झकझोर दिया था। ईसाई मिशनरियों द्वारा महाराजा रणजीत सिंघ के सुपुत्र कुंवर दलीप सिंघ को ईसाई बनाना मूलभूत कारणों में आता है। यहीं पर बस नहीं, बल्कि उसके द्वारा ५०० रुपए सालाना ईसाई मिशन को देने के लिए उसे रज़ामंद भी कर लिया गया। ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाईअत के प्रचार के लिए लाहौर, श्री अमृतसर साहिब, कोटगढ़, पिशौर, कांगड़ा, कश्मीर, नारोवाल, मुलतान, बटाला आदि स्थानों पर शैक्षणिक केंद्र स्थापित कर लिए गए थे। इसके अलावा ईसाइयों द्वारा दयाल सिंघ मजीठिया को प्रेरित कर श्री अमृतसर साहिब में एक बाग़ भी लिया गया और मजीठा में एक गिर्जाघर खोला गया। १८७३ ई. में श्री अमृतसर साहिब के मिशन स्कूल के चार विद्यार्थी— आया सिंघ, अतर सिंघ, साधू सिंघ और संतोख सिंघ ने ईसाई बनने का एलान किया, जिसने सिक्ख मानसिकता को गहरी चोट पहुंचाई। बेशक सिक्खों द्वारा उन विद्यार्थियों को ईसाई बनने से रोक लिया गया, लेकिन यह घटना सिक्खों के

**रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब। फोन : ९९१४२-४२९१२*

लिए बड़ी चिंता का विषय बनी। इसी समय के दौरान सरकार-समर्थक व्यक्ति श्रद्धा राम फिलौरी ने गुरु का बाग श्री अमृतसर साहिब में सिक्ख गुरुओं के ख़िलाफ़ कुछ अयोग्य शब्द बोले और खालसा पंथ की कड़ी नुकताचीनी की, जिस कारण सिक्खों में आक्रोश और जोश पैदा हुआ। यही कुछ तत्कालीन कारण थे, जिनके कारण आखिर १८७३ ई. में श्री अमृतसर साहिब के गुरु का बाग़ नामक स्थान पर 'सिंघ सभा' की आधारशिला रखी गई, जिसमें कुँवर बिकरम सिंघ कपूरथला, बाबा खेम सिंघ बेदी, सरदार ठाकर सिंघ संधावालिया आदि सिक्ख शख़्सियतें शामिल हुईं। इस सभा के दौरान सरदार ठाकर सिंघ संधावालिया को सिंघ सभा लहर का पहला प्रधान नियुक्त किया गया और ज्ञानी गिआन सिंघ को सचिव बनाया गया। सदस्यों के दाख़िले के लिए नियमावली तैयार की गई तथा सिंघ सभा के प्रसार के लिए ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान, तख़्त साहिबान आदि स्थानों पर संदेश भेजे गए। सिंघ सभा लहर के उद्देश्य थे :

१. सिक्खों में फैल चुकी कुरीतियों को दूर करना।

२. गुरसिक्खी की मर्यादा का पुनर्गठन करना और उच्च किरदार वाले सिक्ख पैदा करना।

३. ईसाई मिशनरी और सनातन मत के प्रभाव से सचेत करना।

४. पंजाबी भाषा में कौमी साहित्य प्रकाशित करना।

५. धार्मिक, व्यावहारिक और अकादमिक विद्या को प्राथमिकता प्रदान करना।

६. सिक्ख अध्ययन को नयी दिशा देना।

७. स्कूल, कॉलेज स्थापित करना।

कुछ समय के पश्चात् सिंघ सभा के प्रारंभिक नेताओं में मतभेद पैदा होने शुरू हो गए। इसका बड़ा कारण लहर में नरम-ख्यालात और गर्म-ख्यालात वाले व्यक्तियों का होना था। उदाहरणतया— बाबा खेम सिंघ बेदी देहधारी गद्दी के समर्थक और नरम स्वभाव के मालिक थे। इसके विपरीत सरदार ठाकर सिंघ संधावालिया गर्म ख्यालों के धारक थे। कुँवर बिकरम सिंघ प्रगतिशील विचारधारा और सुधारवादी ख्यालों के धारक थे। लगभग दो वर्ष बाद सिंघ सभा श्री अमृतसर साहिब का प्रचार धीमा पड़ गया था।

सिंघ सभा श्री अमृतसर साहिब के पुनर्रुत्थान के लिए भाई गुरमुख सिंघ ने यत्न शुरू किये और दो पुराने नेता सरदार ठाकर सिंघ संधावालिया और कुँवर बिकरम सिंघ को अपने साथ मिला लिया। भाई गुरमुख सिंघ की मेहनत सदका पंथक सभाएं पुनः आयोजित होना शुरू हो गईं। सिंघ सभा का पहला मुख्यालय श्री अमृतसर साहिब में था, मगर लाहौर में भी सिक्खी के प्रचार और प्रसार की अति आवश्यकता थी, अतः इस सम्बन्ध में एक नई सिंघ सभा बनाने की तजवीज़ रखी गई। आखिर १८७९ ई. में लाहौर में पंथक सभा

आयोजित की गई और सर्वसम्मति से गुरमता पारित कर सिंघ सभा लाहौर की आधारशिला रखी गई। सिंघ सभा लाहौर को बनाने का मुख्य कारण यह था कि यहाँ आर्य समाजी बड़े स्तर पर अपने पैर पसार रहे थे। देखते ही देखते उनके द्वारा एक वर्ष में ही लाहौर, श्री अमृतसर साहिब गुरदासपुर, गुजरांवाला, फ़िरोज़पुर, रावलपिंडी, जेहलम आदि स्थानों पर अपने केंद्र स्थापित कर लिए गए। सिंघ सभा लाहौर का मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म का प्रचार और विद्या के क्षेत्र में विकास करना था। भाई हरसा सिंघ और भाई गुरमुख सिंघ के सामूहिक यत्न से गुरमुखी भाषा के विकास को प्राथमिकता दी गई। उनके द्वारा गुरमुखी भाषा को ओरिएंटल कॉलेज में भी पढ़ाया जाने लगा था। सिंघ सभा लाहौर ने शुरूआती दौर में ही दो बड़े कार्य आरंभ किए :—

१. धर्म— जिसमें आसा की वार, शब्दों का पढ़ना, पढ़ाना, छपवाना, बाँटना, कीर्तन करना आदि।

२. विद्या— जिसमें स्कूल, कॉलेज खोलना, पत्रिकाएं प्रकाशित करना, गुरमुखी अख़बार प्रकाशित करना आदि।

सिंघ सभा लाहौर ने अपने कार्यों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम १० नवंबर, १८८० ई. दिन बुधवार को साप्ताहिक गुरमुखी अखबार प्रकाशित करना शुरू किया। इसके साथ ही १८८१ ई. में शैक्षणिक पत्रिका 'विद्यारक' को शुरू किया गया। इस मासिक पत्रिका का संपादन भाई गुरमुख सिंघ द्वारा किया गया। इसके पश्चात् उर्दू में 'खालसा गज़ट' अखबार को लाहौर से प्रकाशित किया जाने लगा। इस प्रकार सिंघ सभा लाहौर निरंतर अपने कार्यों को करती हुई अलग-अलग क्षेत्रों में अपना प्रभाव छोड़ रही थी।

सिंघ सभा लाहौर में ज्ञानी दित्त सिंघ की भूमिका को दरकिनार नहीं किया जा सकता। वे भाई गुरमुख सिंघ की प्रेरणा से सिंघ सभा लाहौर में शामिल हुए थे। ज्ञानी दित्त सिंघ द्वारा 'खालसा अखबार' की ज़िम्मेदारी १३ जून, १८८६ ई. को संभाली गई और निरंतर लगभग १९०१ ई. तक संपादन-कार्य करते रहे। बेशक यह अख़बार एक बार बंद भी हो गया था, परन्तु ज्ञानी दित्त सिंघ ने इसे पुनः १८९३ ई. में अपने खर्चे पर शुरू किया। जहाँ ज्ञानी दित्त सिंघ द्वारा अख़बार का संपादन-कार्य किया गया, वहीं उनके द्वारा ३८ से अधिक बहुमूल्य रचनायें भी लिखी गईं। सिंघ सभा लहर बीसवीं सदी में अलग रूप धारण कर गई थी, जिस कारण बाद में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर की आरंभता और सफलता का आधार सिंघ सभा लहर को ही माना जा सकता। इसी लहर के कारण सिक्ख कौम के महान हीरे भाई कान्ह सिंघ नाभा, भाई वीर सिंघ, प्रो. साहिब सिंघ, सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन आदि श्रेष्ठ विद्वान पैदा हुए, जिन्होंने सिक्ख अकादमिकता को नयी बुलंदियों पर पहुँचाया।

साका पंजा साहिब के शहीद

– स. हरविंदर सिंघ खालसा*

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय सिक्खों में ऐसी जागृति आई कि गुरु का प्रत्येक सिक्ख महंतों से गुरुद्वारा साहिबान को आज़ाद करवाने के लिए और हर तरह की कुर्बानी देने के लिए तैयार हो गया। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के साके ने सिक्ख कौम में महंतों के विरुद्ध नफ़रत और आक्रोश पैदा कर दिया। इसी तरह गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा शुरू हुआ। शिरोमणि अकाली दल की तरफ से गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के समय दी जा रही शांतमयी गिरफ़्तारियों और अंग्रेज़ सरकार की पुलिस द्वारा बी. टी. के नेतृत्व में सिंघों पर किये जा रहे अत्याचार ने समूचे भारतीयों को सोचने पर विवश कर दिया। गुरु के बहादुर अकाली सिंघ १००-१०० लाठियां खाने के बावजूद शांतमयी रहने का प्रण निभा रहे थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग से गिरफ़्तार किए गए सिंघ जिस तरफ़ भेजे जाते, उसी तरफ़ संगत उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर पहुँच जाती और गिरफ़्तार सिंघों की पूरी श्रद्धा के साथ सेवा की जाती। कई स्टेशनों पर कैदी सिंघों की सेवा करने की इजाज़त स्टेशन अधिकारी न देते और गाड़ी के आस-पास पुलिस का सख़्त पहरा लगा देते।

गुरुद्वारा गुरु का बाग से गिरफ़्तार किए गऐ सिंघ ज़्यादातर अटक और कैबलपुर की जेलों में भेजे जाते थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे में पूर्व फ़ौजी सिंघों का एक जत्था सूबेदार अमर सिंघ धालीवाल रियासत कपूरथला के नेतृत्व में गिरफ़्तार हुआ। इस जत्थे के उप जत्थेदार मा. चतर सिंघ हवलदार पलटन नंबर १९ थे। जज ने इस जत्थे के गिरफ़्तार सिंघों को ढाई-ढाई वर्ष की कैद और एक- एक सौ रुपए जुर्माने की सज़ा सुनाई। इस जत्थे के सिंघों को २९ अक्तूबर, १९२२ ई. को रात की गाड़ी द्वारा श्री अमृतसर साहिब से अटक जेल भेजा गया। इस गाड़ी ने पंजा साहिब के रास्ते अटक पहुँचना था। पंजा साहिब की संगत को पता चला कि यह गाड़ी प्रात: काल ८ बजे पंजा साहिब स्टेशन से गुज़रेगी। पंजा साहिब के सिंघों ने गाड़ी में गिरफ़्तार होकर अटक जा रहे सिंघों की सेवा करने का फ़ैसला किया और अमृत बेला में लंगर तैयार कर ८ बजे से पहले स्टेशन पर पहुँच गए। स्टेशन पर कोई ढाई-तीन सौ के करीब सिंघ इकठ्ठा हो गए।

स्टेशन पर एकत्र हुई संगत की तरफ से स्टेशन मास्टर से पूछने पर पता चला कि गाड़ी पंजा साहिब स्टेशन पर नहीं रुकेगी और सीधी गुज़र जायेगी। भाई क रम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ, जो उस समय पंजा साहिब गुरुद्वारा साहिब में सेवा कर रहे थे, ने स्टेशन मास्टर से निवेदन किया कि हमने सिंघों को लंगर छकाना है, इसलिए स्टेशन पर गाड़ी को रोका जाए। स्टेशन मास्टर द्वारा मना करने पर आखिर भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ के नेतृत्व में ५० सिंघ रेलवे लाईन पर बैठ गए। गाड़ी सीटी बजाती हुई अति तीव्र गति के साथ आ रही

*ए-२४, करतार कालोनी, गोनिआणा रोड, बठिंडा— १५१००१, फोन : ९८१५५-३३७२५

थी और सिक्ख अपने कैदी वीरों की सेवा करने के लिए लाईन पर डटे हुए थे। जब गाड़ी पंजा साहिब स्टेशन पर आई तो कई सिंघों को कुचलती हुई, आखिर रुक गई। भाई करम सिंघ, जो गुरुद्वारा साहिब में कीर्तन किया करते थे, शहीद हो गए। भाई प्रताप सिंघ, जो गुरुद्वारा साहिब के ख़ज़ांची थे, गंभीर रूप से घायल हो गए। जब उन्हें इंजन के पहिये से बाहर निकाला गया तो वे बड़ी कठिनाई से साँस ले रहे थे। फिर भी उनके मुँह से वचन निकले कि पहले भूखे-प्यासे सिंघों को लंगर-पानी छकाओ, फिर हमारा ख़्याल करना।

यह दर्दनाक दृश्य देख कर लंगर तो क्या छकना था, मगर भाईचारक प्रेम के लंगर की अनवरत धारा ने सिक्खी ज़ज़्बे से लोक-हृदयों को लबालब भर दिया। आखिर गाड़ी अटक के लिए आगे बढ़ गई। इस घटना में छः सिंघों के शारीरिक अंग कट गए।

भाई प्रताप सिंघ को गुरुद्वारा पंजा साहिब ले जाया गया, जहाँ भाई साहिब जी ने कुछ घंटों बाद प्राण त्याग दिए। भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ का अंतिम संस्कार रावलपिंडी में किया गया। शहीद सिंघों की अंतिम यात्रा में हज़ारों हिंदू, सिक्ख और मुसलमान भाई शामिल हुए। रावलपिंडी में जगह-जगह पर संगत की तरफ से शहीदों की देह पर फूलों की वर्षा की गई।

शहीद भाई प्रताप सिंघ का जन्म २६ मार्च, १८९९ ई. (कुछ स्रोतों में २१ सितंबर १८९८ ई.) को पिता सरदार सरूप सिंघ व माता प्रेम कौर के घर गाँव अकालगढ़, ज़िला गुजरांवाला में हुआ। आप जी ने प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव में ही हासिल की और पढ़ाई के बाद कुछ समय अध्यापक भी रहे। आपका विवाह १९१८ ई. में बीबी हरनाम कौर के साथ हुआ। आप जी की पत्नी बीबी हरनाम कौर ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को संगत के साथ ही रेल पटड़ी पर बैठी थी। इससे पूर्व आप जी के घर एक लड़के तरलोक सिंघ का जन्म हुआ और जब वह दो साल का था तो एक दिन गुरुद्वारा साहिब में खेलता हुआ गर्म पानी के पतीले में गिर गया और उसका देहांत हो गया। फिर आप जी के घर आप जी की शहादत के बाद बेटी जोगिंदर कौर का जन्म हुआ। बीबी जोगिंदर कौर के घर चार पुत्रों ने जन्म लिया। अब यह परिवार दिल्ली में रह रहा है।

भाई करम सिंघ का जन्म १४ नवंबर, १८८५ ई. को भाई भगवान सिंघ और माता रूप कौर के घर हुआ। भाई भगवान सिंघ तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में ग्रंथी की सेवा में संलग्न थे। माँ-बाप ने आपका नाम संत सिंघ रखा। आपने संगीत की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की। आप अपनी पत्नी के साथ १९२२ ई. में गुरुद्वारा साहिब के दर्शन के लिए गए और यहीं पर कीर्तन की सेवा निभाने लगे। आप जी की पत्नी बीबी किशन कौर आप जी के साथ ही गुरुद्वारा साहिब में सेवा करती रहीं। यहीं पर आपने अमृत-पान किया और संत सिंघ से भाई करम सिंघ बन गए। शहादत वाले दिन भी आसा की वार के कीर्तन की समाप्ति जल्दी कर दी, ताकि संगत सही समय पर स्टेशन पर पहुँच कर कैदी सिंघों की सेवा कर सके। आप जी के पारिवारिक सदस्य गुरबखश कालोनी पटियाला में रहते हैं।

भाई करम सिंघ, भाई प्रताप सिंघ अनोखे शहीद थे, जिन्होंने तेज़ गति से आ रहीं रेलगाड़ी रोक कर सिंघों को लंगर छकाने का प्रण पूरा किया और शहादत प्राप्त की। समूचे पंथ की तरफ से अरदास में ऐसे शहीदों की कमाई का ध्यान धर कर वाहिगुरु-वाहिगुरु उच्चारण किया जाता है।

गुरुद्वारा श्री थड़ा साहिब, बागेश्वर

*-डॉ. परमवीर सिंघ **

अल्मोड़ा से लगभग ७५ किलोमीटर की दूरी पर सरयू और गोमती नदी के संगम-स्थल के तट पर 'बागेश्वर' नगर बसा हुआ है। यहाँ पर स्थित शिवजी का एक प्राचीन मंदिर बहुत प्रसिद्ध है।

बागेश्वर के इस प्रसिद्ध मंदिर से लगभग १०० मीटर की दूरी पर 'गुरुद्वारा श्री थड़ा साहिब' सुशोभित है। पुराने बाज़ारों में से होते हुए जब मंदिर के पास खड़े होकर सरयू नदी में प्रवाहित पानी के आगमन वाली दिशा की तरफ देखें तो गुरुद्वारा साहिब का निशान साहिब नज़र आ जाता है। मूलभूत रूप से यह गुरुधाम कब वजूद में आया या देश-विभाजन से पूर्व इसका स्वरूप कैसा था, इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। कहा जाता है कि प्राचीन समय में एक चबूतरे के पास निशान साहिब मौजूद था और वहाँ रहने वाले पंजाबी परिवार इसके दर्शन करने के लिए आते थे। स्थानीय निवासी लोगों के साथ बात करने से पता चलता है कि किसी समय यह एक आबाद स्थान था और महंत इसकी सेवा-संभाल करते थे, परन्तु समय के साथ-साथ इसके आस-पास स्थानीय लोगों द्वारा कब्ज़े कर लिए गए, परन्तु फिर भी 'श्री थड़ा साहिब' वाला स्थान संरक्षित है।

इस स्थान से सम्बन्धित सबसे महत्वपूर्ण जानकारी 'गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब' के पूर्व मैनेजर ज्ञानी हरचरन सिंघ के माध्यम से सामने आती है। अपनी एक लिखित में वे बताते हैं कि अप्रैल १९६९ ई. में बागेश्वर निवासी श्री भगवान दास कक्कड़ की चिट्ठी गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब के अध्यक्ष कर्नल लाल सिंघ के नाम आई, जिसमें बताया गया था कि ''यह स्थान श्री गुरु नानक देव जी महाराज का है और बहुत-सी जागीर गुरु-स्थान के नाम पर है। अब केवल एक 'थड़ा (चबूतरा) साहिब' बचा है, जिस पर निशान साहिब झूल रहा है। आप इस स्थान की सेवा-संभाल करने की कृपा करें!'' अध्यक्ष महोदय ने वहाँ जाकर सारी जानकारी प्राप्त करने की ज़िम्मेदारी मुझे (ज्ञानी हरचरन सिंघ) सौंपी तो श्री वैसाखी राम और सरदार आसा सिंघ के साथ वहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उस समय यह नगर अल्मोड़ा ज़िले के अधीन था वहाँ के माल विभाग में से इस गुरुधाम की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने वाले दस्तावेज़ तो नज़र नहीं आए, जो कि वहाँ के राजा बाज़ बहादुर द्वारा श्री गुरु नानक देव जी के नाम ज़मीन भेंट करने की गवाही भरते थे, मगर सरकारी रिकार्ड में यह जानकारी दर्ज हुई मिलती है :—

''१८३५ ईस्वी महाराजा अधिराज बाज़

*सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला— १४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२

बहादुर चंद कत्यूर भूमि चढ़ाई। बामूजब हुक्म अधिकारी गुरु नानक बाला ज़मीन शामिल खालसा मंडल शेर के हुआ।''

इसके साथ ही गुरुद्वारा साहिब को ४०० नाली ज़मीन भेंट करने का विवरण भी प्राप्त होता है। २० नाली का एक एकड़ माना जाता है। इस हिसाब से २० एकड़ ज़मीन गुरुद्वारा साहिब के नाम लगाई गई थी। उस इलाके में राजाओं-महाराजाओं द्वारा धर्म-अर्थ दान की जाने वाली ज़मीन को 'गूंठ' कहा जाता है। ज्ञानी जी बताते हैं कि महाराजा बाज़ बहादुर चंद कत्यूर ने यह ज़मीन गुरु साहिब के नाम भेंट की थी।

माल विभाग के दस्तावेज़ों में दर्ज इस ज़मीन पर अब कब्ज़े हो गए हैं जिसमें इस स्थान के पुजारियों का ज्यादा दोष बताया जाता है, जिन्होंने 'गुरुद्वारा श्री थड़ा साहिब' और 'निशान साहिब' को छोड़ कर धीरे-धीरे सारी ज़मीन बाहरी लोगों को बेच दी थी। जब ज्ञानी हरचरन सिंघ वहाँ गए थे तो शंकर लाल पुजारी उस स्थान की सेवा-संभाल करता था और अपनी आजीविका चलाने के लिए उसने एक छोटा-सा होटल खोल रखा था। गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब की समिति ने यहाँ के एक प्रचारक ज्ञानी प्रीतम सिंघ जबोवाल को बागेश्वर भेजा था, जिसने वहाँ के पंजाबी परिवारों के साथ मिल कर इस गुरुधाम के रखरखाव के लिए विशेष यत्न आरंभ कर दिए थे। जल्दी ही थड़ा साहिब के साथ दो कमरे लेकर एक में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश कर दिया गया और दूसरा कमरा ग्रंथी सिंघ के निवास के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा था। १९७५ ई. में गुरुद्वारा साहिब के निकटवर्ती घरों के लगभग सभी कमरों का कब्ज़ा छुड़ा कर प्रबंध में सुधार लाने का यत्न किया गया। इस गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल में बागेश्वर के पंजाबी परिवारों का विशेष योगदान था, इसलिए जब प्रबंध को स्थायी रूप से चलाने के लिए एक स्थानीय समिति का गठन किया गया तो श्री भगवान दास कक्कड़ को अध्यक्ष और सरदार जुगिंदर सिंघ को सचिव नियुक्त किया गया। बैंक में गुरुद्वारा साहिब के नाम खाता खोला गया, जिसमें दानी सज्जनों द्वारा दी गई धनराशि से गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन पर काबिज़ लोगों को हटाया गया और प्रबंध में निरंतर सुधार होने लगा।

उत्तराखंड की यात्रा करते हुए जब ४ मई, २०२३ ई. को इस गुरुद्वारा साहिब में दर्शन करने के लिए पहुँचे तो श्री किशन कुमार सोनी के साथ मुलाकात हुई। इन्हें 'सोनी प्रधान' नाम से जाना जाता है और वर्तमान समय में यही सज्जन गुरुद्वारा साहिब के रखरखाव में विशेष रुचि ले रहे हैं। यह श्री परशुराम सोनी के सपुत्र हैं, जो कि देश-विभाजन के उपरांत पाकिस्तान से यहाँ आकर बस गए थे। इनके साथ ही कुछ और पंजाबी सहजधारी परिवार भी यहाँ आकर बस गए थे। उन्होंने बताया कि यहाँ मौजूद पंजाबी सहजधारी परिवारों ने इकठ्ठा होकर गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल तो आरंभ कर दी परन्तु यह जगह बहुत कम थी। पिता जी तथा कुछ अन्य पंजाबी सहजधारी परिवारों ने मिल कर गुरुद्वारा साहिब के साथ लगती ज़मीन लेना शुरू

कर दी थी और पत्थरों वाले एक छोटे-से दो-मंजिला गुरुद्वारा साहिब की इमारत का निर्माण कर लिया था। १९८४ ई. में तत्कालीन भारत सरकार द्वारा करवाए गए सिक्ख कत्ल-ए-आम के समय इनकी आयु लगभग १६ वर्ष थी। उस समय इस गुरुद्वारा साहिब का भारी नुकसान हुआ था और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी हुई थी। गुरुद्वारा साहिब के साथ इनका बहुत लगाव था और इसके पुनर्निर्माण एवं मान-मर्यादा बहाल करने की मन में तीव्र इच्छा थी। उस समय ये काशीपुर में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। जब गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब दर्शन करने के लिए गए तो वहाँ बाबा फौजा सिंघ कार-सेवा वालों के साथ मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा कि कहाँ से आए हो, तो बताया कि बागेश्वर का रहने वाला हूं। १९८४ ई. में पैदा हुए हालात के मद्देनज़र उन्हें बागेश्वर के गुरुद्वारा साहिब के बारे में जानकारी दी तो वे गुरुद्वारा साहिब के पुनर्निर्माण के लिए तत्पर हो गए। उनके समय में गुरुद्वारा साहिब का पुनर्निर्मण हुआ था। उनके बाद बाबा तरसेम सिंघ इस स्थान की सेवा-संभाल करते रहे। लंगर की इमारत और निवास हेतु कमरों के निर्माण में उनका ही विशेष योगदान रहा।

सोनी प्रधान ने बताया कि यह रास्ता कैलाश पर्वत की तरफ जाता है और १९८४ ई. से पहले हेमकुंट साहिब के दर्शन करने के लिए जाने वाली संगत लौटते समय कर्णप्रयाग, थरैली, गुआलदम, बैजनाथ आदि नगरों से होती हुई बागेश्वर में गुरु जी के इस स्थान पर दर्शन करने के लिए आती थी और यहाँ से आगे गुरुद्वारा रीठा साहिब व गुरुद्वारा नानकमता साहिब के दर्शन करने के लिए जाती थी। वर्तमान समय में लगभग ३५०० स्केयर फुट ज़मीन पर दरबार हॉल, लंगर हॉल और निवास के लिए कमरे (सराय) आदि बने हुए हैं।

इसके अलावा उन्होंने पीपल के एक पेड़ के बारे में जानकारी प्रदान की जो कि गुरुद्वारा साहिब से लगभग २ किलोमीटर दूर है। कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी सर्वप्रथम इस पीपल के पेड़ के नीचे आकर विराजमान हुए थे। यह पीपल का पेड़ सूखा हुआ था और गुरु जी के चरण-स्पर्श से हरा-भरा हो गया था। पीपल के इस पेड़ की इलाके के लोगों में बहुत मान्यता है। जब इस पीपल के पेड़ को देखने गए तो पता चला कि स्थानीय लोगों ने अपनी आस्थानुसार इसके इर्द-गिर्द छोटी-छोटी मूर्तियाँ रख ली हैं।

अंत में उन्होंने बताया कि गुरुद्वारा साहिब से सम्बन्धित बहुत-से कार्य करने अभी शेष हैं जिन्हें पूरा करने के लिए ज्यादा धन की ज़रूरत है। छोटे-मोटे कार्य तो स्वयं ही कर लिए जाते हैं, परन्तु बड़े कार्य करने के लिए कठिनाई पेश आती है। यदि सिक्ख संगत दोबारा इस स्थान पर आना शुरू हो जाये तो १९८४ ई. से पूर्व वाली चहल-पहल पुनः वापस लौट सकती है।

कबीर राम कहन महि भेदु है . . .

- डॉ. चमकौर सिंघ*

भिन्न-भिन्न कोशों मे 'राम' के शाब्दिक/सांकल्पिक अर्थ इस प्रकार दिए गए हैं— सर्वव्यापक, रमणीय, सुहावना, आनन्ददायक, प्रसन्नतादायक, सुंदर, प्रिय, मनोहर आदि। गुरबाणी के पवित्र पाठ के प्रकरणों में 'राम' मुख्य रूप से दो प्रसंगों में पेश हुआ है। अधिकांश प्रकरणों में यह पारब्रह्म की परम हस्ती के अर्थों का सूचक है, जबकि कुछ प्रकरणों में यह रामायण के नायक श्री रामचन्द्र के अर्थ का बोध करवाता है। पारब्रह्म के अर्थ में यह राम, घट-घट का निवासी है और कण-कण में रमा हुआ है :

-असुर सघारण रामु हमारा ॥
घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥
नाले अलखु न लखीऐ मूले
गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥ *(पन्ना १०२८)*
-तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ *(पन्ना ८)*
-रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥
(पन्ना ७६३)

गुरबाणी-पाठ के निम्नलिखित प्रकरणों में 'राम' शब्द अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र के अर्थ का सूचक है, जिसके साथ रामायण-कथा के प्रसंगार्थी परिप्रेक्ष्य जुड़े हुए हैं:

-रोवै रामु निकाला भइआ ॥
सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥
(पन्ना ९५३)
-रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥
बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥
सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥
नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥
(पन्ना १४१२)

यह 'राम' के अर्थों का वह प्रसंग है जो रामायण की कथा के माध्यम से लोगों में चर्चित था और जिसमें राम-कथा से सम्बन्धित कमज़ोर प्रस्तुतीकरण भी स्वाभाविक रूप से लोकमानसिकता में प्रवेश हो रहा था।

गुरबाणी-प्रवचन में धर्म-शास्त्रीय चिह्न 'राम' परम हस्ती के लिए पेश होकर परमार्थी महांदृष्टि के साथ संचित होता है और स्पष्ट तौर पर श्री रामचन्द्र के अर्थ की अपेक्षा पृथक होकर सामने आता है। पवित्र गुरबाणी के कुछ प्रकरणों में देहधारी राम को बहुवचनी प्रस्तुति और निरंकारी राम को एकवचनी प्रस्तुति द्वारा भी अलग-अलग अर्थ ग्रहण करते हुए देखा जा सकता है :

-नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
(बहुवचन) *(पन्ना ४६४)*
-एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥

*निदेशक, पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस स्टडीज़ इन सिक्खिज़म, बहादुरगढ़, पटियाला— १४७००२, फोन : ९४१७९-३५४७४

(एक वचन) *(पन्ना ११११)*

इसी प्रकार 'सलोक वारां ते वधीक' शीर्षक के अंतर्गत दर्ज श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के एक सलोक में 'राम' के दोनों अर्थ विवेकशीलता के साथ भिन्न-भिन्न पेश होते हैं। इस प्रकरण में श्री गुरु नानक साहिब विशेष अंदाज़ में फरमान करते हैं कि सीता व लक्ष्मण के वियोग में दुखी होते हुए श्री रामचन्द्र ने हनुमान के सहयोग से जो कुछ भी किया, वह आश्चर्यजनक कार्य निरंकारी राम (प्रभु) की कृपा द्वारा ही संभव हुआ। इसको नासमझ रावण भी नहीं समझ सका कि अचिंत निरंकारी राम (प्रभु) के कृत्य को मिटाया नहीं जा सकता :

मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥
हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥
भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥
नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥

(पन्ना १४१२)

मानव-बुद्धि के सामर्थ्य से परे, युगों-युगों से शाश्वत अस्तित्व के मालिक निरंकारी राम को गुरबाणी में अंग-संग सहायी और स्नेही हस्ती के तौर पर प्रस्तुत किया गया है:

-ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥

(पन्ना १०२७)

-ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥
गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥

(पन्ना ११६९)

'राम' के उक्त दोनों अर्थ-भेद दर्शाने वाली सुर भक्त-बाणी के प्रकरणों में भी स्पष्ट रूप से सुनाई देती है :

कबीर राम कहन महि भेदु है
ता महि एकु बिचारु ॥
सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ।।१९०।।
कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥
एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥

(पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी फरमान करते हैं कि राम का जाप करने में एक रहस्य है। विचारणीय नुक्ता है कि यह शब्द, हर कोई राजा दशरथ के पुत्र के लिए भी इस्तेमाल करता है और यही शब्द कुदरत के अद्भुत खेल के सृजक के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। हे कबीर! तू हर जगह रमे हुए (रमणीय) राम का जाप-सुमिरन कर, परंतु जपते समय यह विवेकी समझ बनाए रख कि एक राम तो सभी विभिन्नताओं या सृजनाओं (अनेकताओं) में व्यापक है, जबकि दूसरा (श्री रामचंद्र) केवल अपने आप तक समाया या सीमित है।

इस प्रकार गुरबाणी-प्रवचन में निर्गुण, निरंकारी और सर्वव्यापक पारब्रह्म के निरूपण की प्रक्रिया के दौरान विष्णु की अवतार-पूजा के साथ जुड़ा भारतीय धर्म-शास्त्रीय चिह्न 'राम', बहुप्रकारी गुणों-उपमायों को ग्रहण करते हुए पुनः परिभाषित होता है और घट-घट निवासी, सृजनकर्ता करतार के लिए नये अर्थों में पेश होता है। सांकल्पिक अर्थों और रामायण-कथा के प्रसंगार्थी संदर्भ से मुक्त होकर परमार्थी महा दृष्टि से शरसार, पुनः पेशकारी यह गुर-परगासी प्रक्रिया,'राम' शब्द को ऊँचे, गौरवशाली और उदात्त अर्थ प्रदान करती है।

पाँच खंड

*-प्रो. दविंदर पाल सिंघ **

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित बाणी में से जपु जी साहिब का सिक्ख-दर्शन में पहला, केंद्रीय और महत्वपूर्ण स्थान है। ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार यह बाणी विभिन्न समय और परिस्थितियों के अनुसार गुरु साहिब को आवेश हुई, जिसे खुद श्री गुरु नानक देव जी ने लिख कर संरक्षित किया। भाई गुरदास जी की गवाही के अनुसार जपु जी साहिब बाणी नितनेम का हिस्सा श्री करतारपुर साहिब में बनी :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि. . . ।. . .
सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा।
(वार १:३८)

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन (१६०१ ई.) आरंभ किया तो जपु जी साहिब बाणी को उन्होंने सबसे आरंभ में रखा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना (१६९९ ई.) के समय इस बाणी को खंडे की पाहुल (अमृत) तैयार करते समय पढ़ी जाने वाली पाँच बाणियों का हिस्सा बनाया। जपु जी साहिब के सबसे आरंभ में 'मूल-मंत्र' है। जपु बाणी के आदि और अंत में एक-एक सलोक के अतिरिक्त ३८ पउड़ियां हैं। बाणी का शीर्षक 'जपु' है, 'जी' और 'साहिब' सम्मान के तौर पर जोड़े जाते हैं। इस बाणी का विषय मुख्य रूप से परम सत्य, सचिआर और आध्यात्मिक विकास है। इनमें से आध्यात्मिक विकास की संक्षिप्त विचार निम्नानुसार है :—

आत्मिक यात्रा (आध्यात्मिक विकास) के पड़ाव का जिस प्रकार का विषय जपु जी साहिब में मौजूद है, उस प्रकार का व्याख्यान अन्य धर्मों में नहीं मिलता। वेदांत, योग आदि भारतीय ग्रंथों में पाँच खंडों के साथ मिलता-जुलता जो विषय प्राप्त है, उसे हम दार्शनिक रचना मानते हैं, अनुभव नहीं। सूफ़ी और ईसाई मत के लेखकों ने रूहानी सफ़र की मंजिलों का विश्लेषण बड़ी मात्रा में प्रस्तुत किया है।

जपु जी साहिब में आध्यात्मिक विकास का वर्णन पाँच खंडों के रूप में किया गया है। ये पाँच खंड हैं—— धर्म खंड, ज्ञान खंड, सरम खंड, कर्म खंड और सच खंड। इनकी निम्नलिखित अनुसार चर्चा की जा रही है :—

वर्णनीय है कि आत्मिक विकास के पांच पड़ावों के नामों के साथ एक साझी संज्ञा 'खंड'

**धार्मिक अध्यापक, गुरु नानक कॉलेज, मोगा (पंजाब)—१४२००१, फोन : ९९१५९-७२७७२*

है। कोशों के अनुसार 'खंड' शब्द संस्कृत में से आया है। इसके अर्थ टुकड़ा, भाग, इलाका, स्थान, कांड, भूमिका, पड़ाव, स्तर, मंडल, दर्जा, आत्म-अवस्था आदि किये गए हैं। ये अर्थ मानवीय चेतना के विकास के दर्जों या मंजिलों के सूचक हैं।

धरम खंड : 'जपु' जी साहिब में आए पाँच खंडों में से धरम (धर्म) खंड सबसे पहला खंड है। चाहे जपु जी साहिब की चौंतीसवीं पउड़ी में धरम खंड का नाम नहीं आया, मगर पैंतीसवीं पउड़ी की पहली पंक्ति से सूचना मिल जाती है कि उपरोक्त (चौंतीसवीं) पउड़ी में धर्म खंड के संबंध में ही वर्णन हुआ है। इस पउड़ी में आए विचार इस प्रकार हैं :

राती रुती थिती वार॥
पवण पाणी अगनी पाताल॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग॥
तिन के नाम अनेक अनंत॥
करमी करमी होइ वीचारु॥
सचा आपि सचा दरबारु॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु॥
नदरी करमि पवै नीसाणु॥
कच पकाई ओथै पाइ॥
नानक गइआ जापै जाइ॥ ३४॥
धरम खंड का एहो धरमु॥...

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७)

धरम खंड में धर्म का अर्थ दैवी नियम से है। यहाँ धरती को धरमसाल (धर्मशाला) कहा गया है, क्योंकि धरती धर्म का घर है। दूसरे शब्दों में, इसमें धर्म व्यापक है। धर्म वो नियम है जो काल के सभी अंगों *''राती रुती थिती वार''* पर लागू होता है। आत्मिक विकास के उत्थान की इस पहली अवस्था में मानव को इस ब्रह्मांड में इस्तेमाल हो रही अनेक प्रकारी क्रियाओं का ज्ञान होता है। रात, ऋतु, थित, वार तथा अनगिनत पवन, पानी, अग्नि, आकाश, पाताल के घटनाक्रम धर्म कमाने के लिए स्थापित हुई 'धरती धरमसाल' के प्रति ज्ञान प्राप्त होता है।

धरम खंड की इस पउड़ी में कारण-कार्य रूपी धर्म का भी इशारा है और कर्म-फल रूपी धर्म का भी। इस धरती पर कई प्रकार की जीवन-युक्तियाँ, अनेक भांति के रंगों के जीव एवं संसार हैं, जो कर्म-नियम में बंधे हुए हैं। ये कर्म-नियम न्यायशील रूप में क्रियाशील हैं, क्योंकि परमात्मा खुद सच्चा है और उसका प्रबंध भी सच्चा है। इस प्रबंध पर नदरि (कृपा) कर्म का नियम लागू होता है। धरम खंड की यह पउड़ी भौतिक जगत में घटित हो रहे नियमों, इसके विभिन्न जीवों और मानव-क्रियाओं का दृश्य प्रस्तुत करती है।

भारतीय परंपरा ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मूल्यों का दोहरा विधान प्रस्तुत किया

था। धरम खंड की यह पउड़ी इन चार पदार्थों में से मानव के आर्थिक व भावुक जीवन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन पर धर्म का पहरा स्थापित करती है। नैतिक दृष्टि से धर्म का जीवन, कर्त्तव्य की पालना का जीवन है, सदाचार का जीवन है, समाज-सेवा का जीवन है। 'सच्चे दरबार' का बिंब धरम खंड की नैतिक भावना को कर्मों के संदर्भ में प्रस्तुत करते हुए आध्यात्मिक स्तर पर ले जाता है। यह नैतिकता और आत्मिक चेतनता का सुखदाई सुमेल है। सत्य के मार्ग पर चले साधक के लिए धरम खंड पहला और आवश्यक पड़ाव है।

गिआन खंड : आत्मिक प्रगति के पथिक की दूसरी अवस्था गिआन (ज्ञान) खंड की अवस्था है, जो दार्शनिक दृष्टि से विश्व की अनंतता और नैतिक दृष्टि से मानव-चिंतन की विशालता का अर्थ निश्चित करती है। गिआन खंड की इस पउड़ी का वर्णन इस प्रकार है :

धरम खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक
केते नानक अंतु न अंतु ॥ ३५ ॥
गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७)

गिआन खंड का संकेत पहले इस (पैंतीसवीं) पउड़ी में आया है। दूसरी बार यही संकेत (अगले) सरम खंड वाली पउड़ी के आरंभ में भी आया है। गिआन खंड में साधक को जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे सृष्टि की बौद्धिक जानकारी, इल्म या वाकफ़ियत के अर्थों में लिया जाता है। कई बार ज्ञान का अर्थ 'ब्रह्म-ज्ञान' भी स्वीकार किया जाता है।

ब्रह्मांडीय घटनाक्रम में घटित ईश्वरीय हुक्म के ज्ञान से जिज्ञासु की चेतना ऊँची हो जाती है, जिससे उसे ब्रह्मांड की अनंतता का ज्ञान होता है। इस अवस्था में साधक को तत्वों की अनंतता अर्थात् पवनों, पानियों, अग्नियों, कान्हों, महेसों, ब्रह्मों, उनके द्वारा अनेक रूप-रंगों की रची रचना का ज्ञान होता है। इस अवस्था में साधक को अनेक ही इंद्रों, सूर्यों, चंद्रमा, सिधों-नाथों, कितनी ही कर्म-भूमियों, कितने ही ध्रुवों, उप-मंडलों-देशों आदि का ज्ञान होता है। पहले साधक को सीमित जीव-संसार या उसके आस-पास का ज्ञान था, लेकिन अब आत्मिक विकास के इस पड़ाव पर साधक को केवल असंख्य जीवों, उनकी जातियों आदि

का ही नहीं, असंख्य जीव-उत्पत्ति के स्त्रोतों (खाणीआं), उनकी अनंत भाषाओं, राजाओं, पातशाहों के बारे में भी पता चलता है। साधक को रत्नों से भरे सागरों (असंख्य पदार्थों का वजूद) और कई अन्य देव-दानवों, मुनि-जनों का ज्ञान भी होता है। एक तरफ़ यह ब्रह्मांडीय रचना के अस्तित्व के अनंत प्रसार का चित्रण है, दूसरी तरफ जीव के बौधिक प्रकाश का वर्णन है। विराट जगत की विशालता और विभिन्नता का बोध करवाने के लिए गुरु साहिब ने इस पउड़ी में लख, असंख, केते, केतीआ के संकेतों का प्रयोग किया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने गिआन खंड के वर्णन में साधक की दृष्टि में परिवर्तन प्रकट किया है। इस अवस्था में साधक को प्रत्येक वस्तु अनंत महसूस होती है। वास्तव में प्रत्येक वस्तु है तो अनंत ही, मगर जब दृष्टि पर अज्ञान का पर्दा पड़ जाये तो उसकी अनंतता छिप जाती है। इसके साथ ही साधक को यह भी अनुभव होता है कि अनंत वस्तुओं की सृजना करने वाला निरंकार खुद भी अनंत है। गुरु साहिब ने गिआन खंड के वर्णन को पैंतीसवीं पउड़ी के पश्चात् छत्तीसवीं पउड़ी में जारी रखते हुए इसकी दूसरी पंक्ति ''नाद बिनोद कोड'' के अनुभव को 'अनंदु' के साथ सम्बन्धित किया है। जब साधक अनंतता के सामने खड़ा होता है तो उसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही आनंद की होती है। अनंतता जब अति एकाग्र रूप में प्रस्तुत हो तो सुंदरता का प्रभाव देती है।

जिन्हें प्रकृति में व्यापक करतार (परमात्मा) का अनुभव होता है, उनके अंदर एक अन्य प्रतिक्रम प्रेमा-भक्ति का भी उत्पन्न होता है। साधारण प्रेमी प्रभु-प्रियतम की सुंदरता के आकर्षण में उसके साथ प्रेम के रिश्ते में जुड़ जाता है, इसीलिए गिआन खंड भक्ति के ज्यादातर पकने की भी अवस्था है। गिआन खंड का ज्ञान मात्र प्राकृतिक अमलों की सूचना नहीं रह जाता, बल्कि यह शबद के रहस्यमयी अनुभव एवं दिव्य दृष्टि के स्तर का आध्यात्मिक ज्ञान भी बन जाता है।

सरम खंड : खंडों की तीसरी अवस्था को श्री गुरु नानक देव जी ने 'सरम' (श्रम) का नाम दिया है। कोशों के अनुसार, सरम (श्रम) के अर्थ हैं—— थकान, यत्न, पुरुषार्थ, मेहनत, प्रयास, संघर्ष, कमाई, लज्जा, आनंद, ख़ुशी आदि। सरम खंड की पउड़ी में आए विचारों का विवरण इस प्रकार है :

सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८)

इस अवस्था में साधक अपने अंत:करण को सुंदर बनाने के लिए सबसे अधिक प्रयास करता है। आध्यात्मिक विकास के इस तीसरे पड़ाव पर मानव की दुनियावी, भौतिक वृत्ति का प्रमार्थीकरण हो जाता है। आत्मिक विकास की दृष्टि से सरम खंड उस उच्च चेतना का सूचक है, जहाँ साधारण सुध-बुध नये सिरे से बनाई जाती है। इस अवस्था पर पहुँचा साधक परम हकीकत की सुंदरता का आनंद उठाता है। वह ब्रह्म और ब्रह्मांड की एकात्मकता का विस्मयकारी अनुभव लेता है। ज्ञान खंड की अवस्था में साधक को कुदरत की रंग-रंगीली एकता का बोध हुआ था। सरम खंड में वह एकता और एकात्मकता का कायल हो जाता है।

सरम खंड अपने आप की पहचान का खंड है। साधक का अपना अपूर्णता का बोध पूर्णता की इच्छा प्रबल करता है। इस अवस्था में केवल इंद्रियां (इन्द्रे) ही पाप-कर्म की तरफ जाने से वर्जित नहीं किए जाते, बल्कि मन भी निर्मल किया जाता है।

सरम खंड की अवस्था आकार से आगे निरंकार तक पहुँचने की अवस्था है। इस खंड का सम्बन्ध आकार के साथ है। यह उच्च अंतर्निहित परिवर्तन की अवस्था है। इस आकार का स्वरूप विलक्षण और अनुपम है। इस अवस्था का कथन नहीं किया जा सकता। इस अवस्था में चेतना, मति, मन तथा बुद्धि का पुनर्निर्माण होता है। साधक की वृत्ति में परिवर्तन आ जाता है। उसके विचार अच्छे, सधे हुए पुरुषों वाले हो जाते हैं। सरम खंड के अंत तक पहुंच कर साधक अहं से निवृत्त होने के लिए तैयार हो जाता है। फिर भी इस खंड के दौरान साधक के मन में अहं का थोड़ा-सा अंश रह जाता है। इसी अंश को बाहर निकालने के लिए साधक को कष्ट सहना पड़ता है। यह अहं का अंश बाहर सबसे मुश्किल निकलता है। जब आत्म-समर्पण शिखर पर पहुँचता है तो यह अंश बाहर निकलने के लिए तैयार होता है, परन्तु यह निकलता तब है जब निरंकार की कृपा होती है। यह कृपा अगली अवस्था (करम खंड) के दौरान होती है। सरम खंड के अंत तक साधक करम खंड के दरवाज़े तक पहुंच चुका होता है। यह निरंकार के महल के दरवाज़े पर खड़ा होता है। जब कृपा का दरवाज़ा खुलेगा, वह महल के अंदर दाख़िल होगा।

करम खंड : धरम, गिआन और सरम के पश्चात् करम (कर्म) खंड की बारी आती है। कोशों के अनुसार करम के अर्थ हैं—— काम, मज़दूरी, कार्य, फ़र्ज़, मेहनत, कृपा, अनुग्रह, बख़शीश आदि। इस पउड़ी में आए विचार इस प्रकार हैं :

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥

तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८)

विद्वानों की बहुसंख्या करम खंड को बख़शीश, अनुग्रह, कर्म, दैवी कृपा का खंड मानती है। श्री गुरु नानक देव जी ने करम खंड में साधक के मन में राम (परमात्मा) या सत्य के बस जाने के तथ्य का वर्णन तीन बार किया है। इससे प्रतीत होता है कि इस खंड का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दैवी अस्तित्व का साधक की चेतना में प्रधान होना है। जब साधक की वृत्ति परम पुरुष के साथ पूर्ण रूप से जुड़ जाती है तो वह प्रेम, आनंद और शक्ति के शिखर का आनंद लेता है।

करम खंड में साधक की वृत्ति पूर्णरूपेण परिपक्व होती है। उसे हर समय दैवी दर्शन होते रहते हैं। इस अवस्था में साधक के सिमरन और ध्यान में पल भर की भी कमी नहीं आती। यह केवल निराकार का खंड है। यहाँ पहुँचे हुए साधक को परमसति व्यापक दिखाई देता है।

इस अवस्था में विचरण करता हुए साधक नित्य कर्म करते हुए भी आध्यात्मिक मंडलों में लिवलीन रहता है। उसे प्रत्येक जगह, प्रत्येक जीव में एक निरंकार ही दिखाई देता है। इस अवस्था में पहुँचे हुए साधक को माया प्रभावित नहीं कर सकती। इस अवस्था में पहुँचे हुए साधक को 'भक्त' कहा जाता है। भक्तों की कर्म-खंडीय प्राप्ति तीन प्रकार की है। कर्म के पक्ष से वे *''जोध महाबल सूर''* हैं, जगत में महान कारनामे करते हैं और अपनी आत्मिक शक्ति का सबूत देते हैं। ज्ञान के पक्ष से वे निरंकार के नित्य नये गुणों को अपनी बुद्धि में प्रविष्ट होता प्रतीत करते रहते हैं। भावुक पक्ष से वे इन गुणों के आकर्षण में निरंकार के प्रेम में मस्त रहते हैं। ये तीनों पक्ष करम खंड में ही विकसित होते हैं। इस खंड में पहुँच कर भी साधक आगे की आकांक्षा रखता है; वह अभी भी पथिक ही है।

सच खंड : आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर चल रहे साधक की यह अहम मंजिल है। कोशों के अनुसार सच के अर्थ हैं—— जो हो, वजूद, सत्, यथार्थ, ठीक, एक रस रहने वाला, ब्रह्म, अस्तित्व वाला, झूठ का अभाव आदि। इस खंड में आए विचार हैं :

सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८)

गुरु साहिब द्वारा करम खंड और सच खंड निरंतर एक ही पउड़ी में प्रस्तुत किये गए हैं। इस खंड को गुरु साहिब ने निरंकार के निवास-स्थान का खंड कहा है। इस खंड का निवासी सर्वशक्तिमान प्रभु है, जो ब्रह्मांड की सृजना कर, इसके खंडों को कृपा-दृष्टि से निहारता है और आनंदित होता है। इस अवस्था में साधक प्रभु के साथ एकसुर हो जाता है। साधक भी उस आनंद और विस्मय का लुत्फ उठाता है, जो निरंकार का सर्वोच्च लक्षण है।

सच खंड में फिर गिआन खंड की भांति सृष्टि का संक्षिप्त रूप से वर्णन आया है। इसमें असंख्य खंडों, मंडलों, वरभंडों, लोकों पर भांति-भांति के आकारों के साधक को दर्शन होते हैं। सच खंड में आकारों के साथ निरंकार भी है। यहाँ निरंकार और आकारों का रिश्ता करतार एवं कर्म का है। निरंकार आकारों को ''करि करि'' देखता या संभालता है। जब साधक चार अवस्थाओं को पार कर पाँचवी में पहुँचता है तो वह पिछली अवस्थाओं के प्रभाव को भी अनुभव करता है। इन सभी अवस्थाओं का आपस में परस्पर सम्बन्ध है। इस अवस्था में साधक केवल रज़ा में विचरण करता हुआ हुक्म की कार कमाता है। यह अवस्था मानव के संपूर्ण होने की है। यहाँ पहुँच कर जल और तरंग (जीव और प्रभु) में कोई भेद नहीं रहता, सब निरंकार स्वरूप ही हो जाता है। ऐसे निरंकार तत्व स्वरूप को कथन करना बड़ा कठिन है।

सारांश रूप से-- कहा जा सकता है कि गुरबाणी का समुच्चय मार्गदर्शन मानव का आत्मिक विकास और कल्याण करना है। सामूहिक रूप से गुरबाणी मानव को संबोधित है। उसे दैवी गुणों की चेतना द्वारा उच्च मंडलों का अनुभव लेने के योग्य बनाना इसका मंतव्य है। जीव स्थूल से सूक्ष्म, और ज्यादा सूक्ष्म तथा अत्यंत सूक्ष्म की दिशा की तरफ प्रगति करे। वह भौतिक-सामाजिक जगत में विचरण करता हुआ बौधिक सहजात्मक एवं नैतिक जीवन-मूल्यों के साथ नाता जोड़े तथा आध्यात्मिकता के शिखर को छू सके। यह उद्देश्य बाणी में समाया प्रत्यक्ष है। यही उपदेश जपु जी साहिब के पाँच खंडों में विद्यमान है। ये पाँच मंजिलें हमारा जीवन-अनुभव हैं, जीवन में प्राप्त की जा सकने वाली दशा हैं। ये परलोक या किसी अदृश्य मंडल की बातें नहीं हैं।

ख़बरनामा

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की वोट बनाते समय हो रही अनियमितताओं को रोकने के लिए तुरंत दख़ल दे गुरुद्वारा चुनाव आयोग : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २८ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साधारण चुनाव के लिए सरकार द्वारा वोट बनाते समय की जा रही नियमों की अनदेखी का कड़ा नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने मुख्य गुरुद्वारा चुनाव आयुक्त जस्टिस एस. एस. सारों से माँग की कि वे इस मामले की गहनता से जाँच करवाएं।

एडवोकेट धामी ने कहा कि पंजाब की सरकार सिक्ख संस्था की वोट बनाने के लिए तय शर्तों का पालन नहीं कर रही। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को संगत से यह जानकारी प्राप्त हो रही है कि सरकारी कर्मचारी हाल ही में हुए लोक सभा चुनाव वाली मतदाता सूची को आधार बना कर वोट बना रहे हैं और साबत सूरत सिक्ख की शर्त को सरेआम अनदेखा किया जा रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि इस मामले को लेकर हाल ही में गुरुद्वारा चुनाव आयुक्त को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल द्वारा मिल कर माँग-पत्र दिया गया है, परंतु इस पर गौर नहीं किया गया।

उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है जैसे गुरुद्वारा चुनाव आयुक्त राज्य सरकार के प्रभावाधीन काम कर रहे हैं, क्योंकि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के एतराज़ के बाद भी गलत वोट बनना निरंतर जारी है। एडवोकेट धामी ने पंजाब की भगवंत मान सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि सरकार सिक्ख संस्था की चुनाव-प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए गलत हथकंडे इस्तेमाल कर रही है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि यह सब ठीक नहीं है, क्योंकि सिक्ख संस्था के प्रबंध का मामला बेहद संजीदा और सिक्ख सरोकारों व भावनाओं के साथ सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है,-- जिसके नुमायंदे चुनने का अधिकार केवल साबत सूरत सिक्खों के पास ही होना ज़रूरी है। उन्होंने गुरुद्वारा चुनाव आयुक्त को इस मामले में तुरंत दख़ल देने की माँग करते हुए कहा कि अनियमितता करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाये।

एडवोकेट धामी ने अदालत द्वारा जगदीश टाइटलर पर दोष तय करने का किया स्वागत

श्री अमृतसर साहिब : ३० अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सन् १९८४ के सिक्ख कत्लेआम के साथ जुड़े एक मामले में दिल्ली की राउज़ एवेन्यू की अदालत की तरफ से दोष तय करने का स्वागत करते हुए कहा कि इससे पीड़ित लोगों को इंसाफ़ मिलने की आशा उत्पन्न हुई है। एडवोकेट धामी ने कहा कि

जगदीश टाइटलर ने सन् १९८४ में हुए सिक्ख कत्लेआम के दौरान पुलबंगस गुरुद्वारा साहिब में सिक्खों पर हमला करने वाली भीड़ का नेतृत्व किया था, जिसमें तीन सिक्खों का कत्ल हुआ था। उन्होंने कहा कि लगभग ४० वर्ष से पीड़ित लोग इंसाफ़ का इन्तज़ार कर रहे हैं, जिन्हें दोष तय होने पर इंसाफ की उम्मीद जगी है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हर समय पीड़ितों के साथ खड़ी है और केस में हर तरह की कानूनी कार्यवाही के लिए सहायता प्रदान कर रही है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सन् १९८४ का सिक्ख कत्लेआम मानव इतिहास में मानव विरोधी कुकृत्य के रूप में अंकित है, जिसके पीड़ित लोगों को इंसाफ़ के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि जगदीश टाइटलर को सख़्त से सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए, ताकि पीड़ित लोगों को इंसाफ़ मिल सके।

श्री गुरु रामदास जी के ४५० वर्षीय गुरुआई दिवस पर गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में गुरमति समारोह आयोजित

श्री अमृतसर साहिब : १४ सितम्बर : श्री गुरु रामदास जी के गुरुआई दिवस और श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-जोत दिवस की ४५० वर्षीय शताब्दी से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री दरबार साहिब परिसर में सुस्थित गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में विशाल गुरमति समारोह आयोजित किया गया, जिसमें ख़ालसा पंथ की प्रमुख शख़्सियतों ने भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने संबोधित करते हुए गुरु साहिब को श्रद्धा और सम्मान भेंट किया और श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में पंथक एकता की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् आयोजित गुरमति समारोह को संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ ने कहा कि सिक्ख इतिहास पूरी दुनिया के इतिहास में अतुलनीय है। सेवा और सुमिरन सिक्खी के दो मुख्य अंग हैं और गुरु साहिबान ने इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की है। उन्होंने कहा कि तीसरे और चौथे पातशाह के ४५० वर्षीय शताब्दी दिवस उनके जीवन, इतिहास और संघर्ष से दिशा लेने के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि श्री गुरु अमरदास जी ने नि:स्वार्थ भावना के अधीन सेवा करने का मार्गदर्शन प्रदान किया और श्री गुरु रामदास जी ने इस सिद्धांत को और सुदृढ़ किया। ज्ञानी रघबीर सिंघ ने श्री गुरु रामदास जी के गुरुआई दिवस की संगत को शुभकामना दी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि गुरु साहिबान से सम्बन्धित शताब्दियों के दिवस हमारे लिए भविष्य के लक्ष्य निर्धारित करने का अवसर हैं। उन्होंने कहा कि आज कई शक्तियां सिक्खी सिद्धांतों को चोट पहुंचाने के यत्न कर रही हैं, जिनका एकजुटता के साथ सामना करने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि दुनिया में केवल सिक्ख कौम के पास ही श्री अकाल तख़्त साहिब

नामक सर्वोच्च तख़्त मौजूद है, जहाँ से सिक्ख दिशा-निर्देश और नेतृत्व प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा कि इस सर्वोच्च संस्था पर प्रत्येक सिक्ख को गर्व होना चाहिए, ताकि कौम की यह निराली विचारधारा और सिद्धांत की चढ़दी कला बरकरार रहे।

इस अवसर पर दमदमी टकसाल के प्रमुख और संत समाज के प्रधान बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा एवं शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६ करोड़ी ने भी सिक्ख धर्म, इतिहास और राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति दृढ़ता व जज़्बा प्रचंड रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास की मौलिकता और महत्ता हर सिक्ख को चढ़दी कला के साथ जीवन जीने की एक प्रेरणा है, जिसके नेतृत्व में जीना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इससे पूर्व सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने गुरु-इतिहास तथा गुरमति विचारें साझा कीं और रागी, ढाडी व कवीशरी जत्थों ने भी हाज़िरी भरी। स्टेज की सेवा हेॅड प्रचारक भाई जगदेव सिंघ ने निभाई।

समारोह के दौरान तीसरे और चौथे पातशाह से सम्बन्धित शताब्दी को समर्पित विशेष सोवीनर भी जारी किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख शख़्सियतों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने सम्मानित किया।

समारोह के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, कार्यकारी समिति के सदस्य सरदार ख़ुशविंदर सिंघ (भाटिया), सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. सतपाल सिंघ तलवंडी भाई, स. दरशन सिंघ शेरखां, स. सतविंदर सिंघ टौहड़ा, स्वामी जी होशियारपुर वाले, बाबा बलजिंदर सिंघ राड़ा साहिब वालों के नुमायंदे, बाबा रोशन सिंघ धबलान, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, सचिव स. प्रताप सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, अपर सचिव स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. बिजै सिंघ, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, स. सुखबीर सिंघ, अधीक्षक स. निशान सिंघ, स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, बीबी रणजीत कौर पंनवां, बीबी अमरजीत कौर, बीबी जसविंदर कौर करनाल, अतिरिक्त मैनेजर स. रजिंदर सिंघ रूबी, स. निशान सिंघ, स. बिकरमजीत सिंघ झंगी व संगत उपस्थित थी।

गुरु साहिबान के फलसफे की रौशनी में
कौम को पंथक एजेंडा निर्धारित करने की ज़रूरत : ज्ञानी रघबीर सिंघ

श्री गोइंदवाल साहिब : १८ सितम्बर : श्री गुरु रामदास जी के गुरुआई दिवस और श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-जोत दिवस की ४५० वर्षीय शताब्दी के अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आयोजित मुख्य समारोह के दौरान गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब में सिक्ख पंथ की प्रमुख शख़्सियतों ने गुरु साहिबान को श्रद्धा व सम्मान भेंट करते हुए सिक्ख कौम को गुरु साहिबान के फलसफे और सिद्धांतों की रौशनी में कौम की प्राथमिकताएं निर्धारित करने की

आवश्यकता पर बल दिया। कौमी शख़्सियतों के संबोधन का सामूहिक रूप से संदेश यही रहा कि आज कौमी एकजुटता और पंथक दृढ़ता की अति आवश्यकता है, क्योंकि कौम को दरपेश चुनौतियों का हल इसी में है।

गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् शताब्दी के विशाल समारोह के दौरान संगत को संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने कहा कि गुरु साहिबान के उपदेश प्रत्येक सिक्ख के लिए जीवन का आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया के धार्मिक फलसफे में सिक्ख गुरु साहिबान की विचारधारा निराले और आदर्श जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान द्वारा दरसाई जीवन-जाच की रौशनी में सिक्ख कौम आत्मविश्लेक्षण कर व्यापक पंथक एजेंडा निर्धारित करे। सिक्खों की कौमी प्राथमिकताओं और हितों को विशाल प्रसंग में विचार कर शक्तिशाली बौद्धिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मंच मज़बूत करना आज की प्रथम आवश्यकता है। उन्होंने कौमी आपदाओं की बात करते हुए कहा कि आपसी गुटबाजी से ऊपर उठ कर एकता के मार्ग पर चलना ही ऐसी आपदाओं से निकलने का असली हल है, जिसे यकीनी तौर पर अपनाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि इतिहास इस बात का गवाह है कि जब कौम की राजसी शक्ति एकजुट थी तब दिल्ली और लाहौर के तख़्तों पर ख़ालसाई निशान (ध्वज) झूलते थे। ज्ञानी रघबीर सिंघ ने शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर सिक्ख कौम का आह्वान किया कि गुरु साहिबान की पवित्र सरजमीं पर 'राज करेगा ख़ालसा' के बोलबाले कायम करने की दिशा की तरफ सक्रियता के साथ बढ़ा जाये।

समारोह के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने गुरु साहिबान को सम्मान भेंट करने के साथ-साथ पंजाब की भगवंत मान सरकार से सवाल करते हुए कहा कि गत समय शताब्दियों के अवसर पर प्रत्येक सरकार की तरफ से पूर्ण सक्रियता के साथ भाग लेकर श्रद्धा व्यक्त की जाती रही है, लेकिन मौजूदा सरकार का नकारात्मक रवैया बेहद दुखदायी है। उन्होंने कहा कि सरकार की तरफ से गोइंदवाल साहिब में विकास-कार्य करना और गुरमति समारोह में भाग लेना तो दूर की बात, गुरु साहिब को समर्पित होते हुए पंजाब में अवकाश तक की घोषणा नहीं की गई। यह पंजाब के लोगों का उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। उन्होंने तख़्त श्री हजूर साहिब और तख़्त श्री पटना साहिब में गत दिनों केंद्र सरकार के प्रतिनिधियों की आमद के अवसर पर हुए मर्यादा के उल्लंघन पर भी चिंता प्रकट की। एडवोकेट धामी ने कहा कि तख़्तों की एक अलग मर्यादा है, जिसे सुनिश्चित बनाए रखना जत्थेदारों की ज़िम्मेदारी है। उन्होंने तख़्त श्री हजूर साहिब का ज़िक्र करते हुए कहा कि सिक्खों के कातिलों की वकालत करने वाले नेता को तख़्त से सम्मान देना सिक्ख मर्यादा व रिवायत का बड़ा उल्लंघन है। उन्होंने सरकारों द्वारा सिक्खों के साथ समय-समय पर की जा रही धक्केशाही और अन्याय की आलोचना करते हुए कहा कि कभी प्रतियोगिता परीक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों के ककार उतरवाए जाते हैं और कभी सोशल मीडिया पर नफ़रती प्रचार के साथ निशाना सेधा जाता है। यहाँ तक कि बंदी सिंघों के मामले में सरकारों का अड़ियल रवैया इनका चेहरा नंगा कर रहा है। उन्होंने कहा कि भाई बलवंत सिंघ राजोआणा के मामले में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक

कमेटी की तरफ से पुन: पटीशन दायर की गई है और शेष बंदी सिंघों की रिहाई के लिए भी संघर्ष जारी रहेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कांग्रेस के प्रमुख नेता की तरफ से सिक्खों को लेकर अमेरिका में की गई टिप्पणी पर भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि भले कांग्रेस नेता का बयान गलत नहीं है, परन्तु सिक्ख यह भी नहीं भूल सकते कि सन् १९४७ से लेकर १९८४ ई. के पश्चात् भी कांग्रेस की तरफ से सिक्खों के साथ किस कद्र भेदभाव किया जाता रहा और उनकी नसलकुशी की जाती रही। उन्होंने कौम से अपील की कि पंथ-विरोधी किसी भी एजंडे को कामयाब न होने दिया जाये और एकता के साथ कौमी अधिकारों के लिए यत्न किये जाएँ।

तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने संबोधन के दौरान कहा कि शताब्दियों के अवसर पर पंथक एकता का प्रभाव पूरी दुनिया में जाता है लेकिन यह निरंतर बना रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि सिक्ख शक्ति इकट्ठा हो तो सरकारों को झुकने में देर नहीं लगती और मसले अपने आप हल हो जाते हैं। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि सरकारें हमेशा कौम को गुटबाजी में बाँटने का षड़यंत्र रचती हैं परन्तु कौम ने सचेत रहना है। उन्होंने सिक्खों को धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर स्थिर रहने के लिए यत्नशील होने के लिए कहा। उन्होंने यह भी कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब सिक्खों के नेतृत्व का केंद्र है, जहाँ पर पूरी कौम को पंथक मामलों में सभी मतभेद भुला कर एकजुट होना चाहिए।

इस अवसर पर शिरोमणि अकाली दल के कार्यकारी प्रधान स. बलविंदर सिंघ भून्दड़ ने संगत के साथ विचार साझा करते हुए कहा कि शताब्दियों के दिवस सिक्ख कौम के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये कौमी उत्साह में बढ़ोत्तरी करते हैं। उन्होंने गुरु साहिबान को श्रद्धा व सम्मान भेंट करते हुए कहा कि सेवा, सुमिरन, नम्रता, प्यार, सहनशीलता और सद्भावना तीसरे पातशाह की शख्सियत के अहम गुण हैं, जिनसे हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा ने कहा कि गुरुपर्व और शताब्दियां मनाना तभी सफल हैं यदि इनसे आत्मिक बल और पंथक जज़्बा हासिल किया जाये। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आयोजित शताब्दी समारोहों की प्रशंसा की। समारोह में शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६ करोड़ी, दल पंथ बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले, पद्मश्री बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, बाबा नरिंदर सिंघ हजूर साहिब, तख़्त श्री पटना साहिब से ज्ञानी गगनदीप सिंघ, तख़्त श्री हजूर साहिब से ज्ञानी तनवीर सिंघ, बाबा तेजिंदर सिंघ नानकसर कलेरां, बाबा जीत सिंघ जौहलां, पाँच प्यारे भाई दया सिंघ के वंशज भाई नौनिहाल सिंघ, महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता और उत्तर प्रदेश के किसान नेता श्री राकेश टिकैत ने भी संबोधित किया। इससे पूर्व सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने कथा-विचार की तथा रागी, ढाडी एवं कवीशरी जत्थों ने हाज़िरी भरी। समागम के दौरान पहुँची शख़्सियतों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता ने गुरु-बख़शीश सिरोपाओ प्रदान किए।

सुलतान-उल-कौम
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

October 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब, गाँव ठट्ठा, ज़िला तरन तारन

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-10-2024